

SHRI RANGA : You allowed those things to be said...

MR. SPEAKER : I do not know what he wanted to say till he said it. Do you want to prolong it ?

SHRI RANGA : I am not in favour of the suggestion made just now that you call a meeting of the different parties. If you do not allow me to say what I want to, what am I to do ?

MR. SPEAKER : I am not calling a meeting, but I will consult the people concerned.

SHRI S. K. TAPURIAH : You should hear the other side also.

SHRI RANGA : I am not in favour of your calling any conference or any meeting of the leaders of parties. This is not the first time that a split has taken place. When the Socialist Party split, they were recognised here ; at that time there was no such meeting as is suggested now. Later on, the Communist Party split into two and there was no such meeting. The Speaker exercised his own prerogative and right... (Interruption.) This time so many of his friends have broken away from the main party, and have formed a group... (Interruptions.)

MR. SPEAKER : I am not allowing any discussion please.

SHRI S. M. BANERJEE Mr. Speaker, Sir.....

12.50 hrs.

PUNJAB LEGISLATIVE COUNCIL (ABOLITION) BILL—Contd.

MR. SPEAKER : The House will now take up further consideration of the following motion moved by Shri Mohammad Yunus Saleem on the 18th November, 1969, namely :

"That the Bill to provide for abolition of the Legislative Council of the State of Punjab and for matters supplemental, incidental and consequential thereto, be taken into consideration."

Shri Ishaq Sambhali.

श्री इसहाक सम्भली (धर्मरोहा) : अध्यक्ष

महोदय, पंजाब लेजिस्लेटिव कौंसिल को एवालिश करने के लिए जो बिल धाया है मैं उसकी तारीफ करता हूँ और सबसे पहले बंगाल के मौजूदा यूनाइटेड फ्रंट गवर्नमेंट को इस मौके पर मुबारकबाद देना अपना फर्ज समझता हूँ कि इस यूनाइटेड फ्रंट ने कौंसिल को एवालिश करने की तरफ एक अच्छा कदम उठाया। चाहिए तो यह था कि कांग्रेस यह कदम उठाती। लेकिन बदकिस्मती यह है कि कांग्रेस ने तो अंग्रेजों की उन परम्पराओं को, उन तरीकों को जो उन्होंने अपने मकसद के लिए अपर हाउसेज कायम किए थे, उनको कायम रखा और प्रोजेक्शन पार्टीज ने, खासतौर पर बंगाल की यूनाइटेड फ्रंट गवर्नमेंट ने उसको एवालिश करने के लिए रहनुमाई की। हमें खुशी है कि उसके बाद पंजाब की प्रकाली पार्टी ने इसके लिए कदम उठाया और वहाँ की प्रेसम्बली ने एक राय होकर के यह रेजोल्यूशन किया। हम तो यह उम्मीद करते हैं कि अब वह वक्त जल्द आ जाना चाहिए कि इस पार्लियामेंट में रेजोल्यूशन पेश हो और राज्य सभा को एवालिश किया जाय।

अध्यक्ष महोदय, आप जानते हैं कि यह अपर हाउसेज अंग्रेजों ने अपने मकसद के लिए कायम किए थे ताकि वह अपने मतलब के लोगों को इस तरह पर वहाँ कायम करके अपनी मंशा के मुताबिक लेजिस्लेशन पास करा सकें। इस सरकार ने भी उसी चीज को कायम रखा। कहां पर तो यह कहा गया था कि उसमें बड़े-बड़े एक्सपर्ट्स हुआ करेंगे, वह अपर हाउस इसलिए होगा कि भिन्न-भिन्न टाइप के एक्सपर्ट किस्म के लोग उसमें आ सकें लेकिन देखने में यह धाया कि जो जनरल एलेक्शन में हार गए जिनको पब्लिक ने रिजेक्ट कर दिया उनको लाकर अपर हाउस में बैठा दिया गया। मैं अपने ही मूब की बात कहता हूँ। हमारे यहाँ से अभी हाल में राज्य सभा में कौन चुन कर आए हैं ? श्री मोहनलाल गोत्रम जिनका पब्लिक

[श्री इसहाक सम्भली]

ने श्रलीगढ़ में रिजेक्ट कर दिया। जो एलेक्शन में बहुत बुरी तरह से हारे उनको राज्य सभा में कांग्रेस ने एम्प्लायमेंट प्रोवाइड कर दिया। यह वही मोहनलाल गौतम हैं कि जिनके बारे में इसी हाउस में जोरदार तौर पर कहा गया कि...

अध्यक्ष महोदय : नहीं, ऐसी बात न करिए, किसी के परसनल रेफरेंस में कोई बात न कहिए।

श्री इसहाक सम्भली : यह इसलिए जरूरी है कि हम इस सरकार को आमादा करें कि यह राज्य सभा को खत्म करने के लिए यहां पर बिल लायें। हम यहां पर इसका पूरा समर्थन करेंगे। आज क्या वजह है, क्या बुझवारी है गवर्नमेंट को इसमें? अब तो कांग्रेस वाले यह कहते हैं कि जो री-एक्शनरी लोग थे वह हम में से चले गए। अगर ऐसा है तो सरकार को इसका सबूत देना चाहिए कि वह राज्य सभा को खत्म करने के लिए यहां पर बिल लाए। बदकिस्मती से राज्य सभा और अपर हाउस में जिन लोगों की नुमाइन्दगी के लिए कायम किए गए थे, मैं यकीन और पूरी जिम्मेदारी के साथ कह सकता हूँ कि न वहां स्थानों को लाने के लिए तबज्जह दी गई, न वहां पर एक्सपर्ट्स को लाया गया और न माइनारिटीज को मोका दिया गया। वहां सिर्फ अगर कोई चीज थी तो गुट-बन्दी का विहाज करके लोगों को लाया गया। इसलिए इस बात की जरूरत है और मैं उम्मीद करता हूँ ऐसे मोके पर जब कि सरकार की प्रोग्रेसिव पालिसीज के लिए सारे डेमोक्रेटिक अपोजीशन का सहयोग हासिल है ऐसे मोके पर इन री-एक्शनरीज के निकल जाने के बाद यह सरकार ऐसा बंदम उठायेगी और राज्य सभा को खत्म करने के लिए यहां पर बिल लाया जायगा।

घालिह में मैं एक चीज की तरफ और तबज्जह दिला दूँ। जैसा कि मैंने कहा कि बंगाल की यूनाइटेड फ्रंट सरकार काबिले मुबारिकबाद है और पंजाब की भकाली सरकार

काबिले तारीफ है, इनके साथ ही मैं भ्रज करना चाहता हूँ कि और सूबों में जहां पर कि कांग्रेस की सरकारें हैं या कांग्रेस पार्टी इन पावर है, उन पर यह क्यों नहीं जोर देते हैं कि वह भी अपने यहां के अपर हाउस को एवालिश करें और यह जो सफेद हाथी मुक्त-लिफ सूबों में बंधे हुए हैं अपर हाउस की शक्ल में इनको खत्म किया जाय? मैं उम्मीद करता हूँ, जसा कि कांग्रेस की तरफ से दावा होता है वह री-एक्शनरीज इनकी तरफ से निकल चुके हैं, अगर निकल चुके हैं तो यह जरूरी है कि इसका भ्रमली सबूत दिया जाय, मरुनलिफ सूबों की कांग्रेस पार्टियों को यह हिदायत की जाय कि वह अपने यहां पर अपर हाउस को खत्म करने के लिए तजबीजें लाएं और मैं चाहूंगा कि कानून मन्त्री इसके लिए यहां पर फरमाएं कि वह राज्य सभा, सेंटर के अपर हाउस को खत्म करने के लिए कब तक तजबीज ला रहे हैं। वह जिस वकत ऐसी तजबीज लाएं, हमारी पार्टी को ही नहीं, सारे डेमोक्रेटिक अपोजीशन की मदद उनके साथ होगी। अगर सरकार यह कहती है कि प्रतिक्रियावादी, री-एक्शनरीज अब उधर चले गए हैं तो सरकार को चाहिए कि मजबूती के साथ तरबकी पसंदगी के लिये बंदम उठाये, मजबूती के साथ अब पब्लिक में किए गए वायदों को पूरा करे। इससे बेहतर मोका उसके लिए कब आएगा जब कि पूरे डेमोक्रेटिक अपोजीशन की सपोर्ट उनको हासिल है और हासिल रहेगी।

[شری اسحاق سنبلی (امروہ) ادیش مہرے۔ پنجاب پیپلس کونسل کو
اباش کرنے کے لئے جوہل آیا ہے میں اس کی تائید کرتا ہوں اور سب سے
پہلے بنگال کے موجودہ ریٹائیٹیڈ فرنٹ گورنمنٹ کو اس موقع پر مبارکباد
دینا اپنا فرض سمجھتا ہوں کہ اس ریٹائیٹیڈ فرنٹ کے کونسل کو اباش کرنے
کی طرف ایک اچھا قدم اٹھایا۔ چاہے تو یہ تھا کہ کانگریس نے قدم اٹھائی
لیکن برقیقی ہے کہ کانگریس نے تو انگریزوں کی ان پرمپلاؤں کو اپنا
کو جو انھوں نے اپنے مقصد کے لئے اپنا فرنٹ قائم کئے تھے۔ ان کو قائم رکھا
اور اپوزیشن پارٹیز کے خاص طور پر بنگال کی ریٹائیٹیڈ فرنٹ گورنمنٹ
نے اس کو اباش کرنے کے لئے رہنمائی کی۔ میں خوش ہے کہ اس کے بعد
پنجاب کی اکیلی پارٹی نے اس کے لئے قدم اٹھایا اور وہاں کی اکیلی
نے ایک رائے ہو کر کے ریڈریشن کیا۔ ہم تو یہ امید کرتے ہیں کہ
اب وہ وقت جلد آجائے گا جسے اس پارلیمنٹ میں ریڈریشن پیش کر
اور راج سبھا کو اباش کیا جائے۔]

ایکشن مہر دے آپ جانتے ہیں کہ اپرٹو سیر انگریزوں نے اپنے مقصد کے لئے قائم کئے تھے تاکہ وہ اپنے طلب کے لوگوں کو اس طرح پر دہاں قائم کر کے اپنی منشا کے مطابق جمعیٹیں پاس کر سکیں۔ اس سرکار نے بھی اس چیز کو قائم رکھا۔ کہاں تو یہ کہا گیا تھا کہ اس میں بڑے بڑے ایکشن ہو کر سگے۔ وہ اپرٹو اس لئے ہو گا۔ کہ جس میں تائب کے ایکشن قسم کے لوگ اس میں آسکیں لیکن دیکھئے میں نے آیا کہ جو جنرل انکیشن

میں ہار گئے جو کہ ایکشن نے ریگٹ کر دیا۔ آپ کو لا کر اپرٹو اس میں بٹھا دیا۔ یہ جو نمبر کی بات کہتا ہوں۔ ہمارے یہاں سبب حال میں راجہ سبھا میں کون جن کر آئے ہیں۔ خری موہن لال کو تو تم کو چلنے والے طریقہ میں ریگٹ کر دیا۔ جو ایکشن میں بہت بڑی طرح سے ہارے ان کو راجہ سبھا میں لا کر گیس نے اپنا منصف پروا کر دیا۔ یہ وہی موہن لال کو تم ہیں کہ مجھ کے بارے میں اس آٹو میں نذر وادہ عہد پر کہ گیا کہ۔۔۔

अध्यक्ष महोदय : ऐसी बात न करिए, किसी क परसन न रफरेस में कोई बात न कहिए ।

شری اسحاق سنہلی :۔۔۔ یہ اس لئے فردی ہے کہ ہم اس سرکار کو آواز کر رہے ہیں کہ راجہ سبھا کو ختم کرنے کے لئے یہاں پر بل لائیں۔ ہم یہاں پر اس کا پورا سامرھن کریں گے۔ آج کیا وجہ ہے کیا دشواری ہے گورنمنٹ کو اس میں۔ اب تو لاگتیں والے یہ کہتے ہیں کہ جوری کٹری لوگ تھے وہ ہم میں سے چلے گئے۔ اگر ایسا ہے تو سرکار کو اس کا ثبوت دینا

چاہئے کہ وہ راجہ سبھا کو ختم کرنے کے لئے یہاں پر بل لائے۔ بدستی سے راجہ سبھا اور اپرٹو سیر جن کو کوئی ناسمجھی کے لئے نام لگئے تھے جس میں اور پوری ذمہ داری کے ساتھ کہہ سکتا ہوں کہ۔۔۔ دہاں سلاس کو لانے کے لئے توجہ دی گئی۔ دہاں پر ایکپیشن کو لایا گیا اور نہ مانڈا شیر کو سوچ دیا گیا۔ دہاں صرف اگر کوئی چیز تھی تو گمشدی کا خاتمہ کر کے لوگوں کو لایا گیا۔ اس لئے اس بات کی ضرورت ہے اور میں اسید کرتا ہوں ایسے موقع پر جب کہ سرکار پر دیگر سببوں کے لئے سارے ڈیموکریٹک پوزیشن کا سہوگ حاصل ہے۔ ایسے موقع پر ان ری ایکشنیز کے نکل جانے کے بعد یہ

سرکار اس قدم اٹھانے کی ضرورت نہیں سمجھتا کہ ختم کرنے کے لئے یہاں پر بل لایا جائے گا۔ آخر میں ایک چیز کی طرف توجہ دلاؤں۔ جیسا کہ میں نے کہا کہ بنگال کی رینائیمنٹ فرنٹ سرکار تاجیل باربار دے اور عجباب کی اکیلا کر قابل قلعہ ہے۔ اس کے ساتھ ہی اس عرض کرنا چاہتا ہوں کہ اور ممبروں میں یہاں پر لاگتیں کی سرکاریں ہیں یا لاگتیں پارٹی ان بالا ہے ان پر یہ کیوں نہیں زور دیتے ہیں کہ وہ بھی اپنے یہاں کے اپرٹو سیر کو اب اس کریں اور یہ فرسیدہ اعلیٰ مختلف ممبروں میں بندھے ہوئے ہیں اپرٹو سیر کی شکل میں ان کو ختم کیا جائے۔ میں اسید کرتا ہوں جیسا کہ لاگتیں کی طرف

سے دعویٰ ہوتا ہے وہ ری ایکشنیز ان کی طرف سے نکل چکے ہیں۔ اگر نکل چکے ہیں تو یہ فردی ہے کہ اس کا یہ عمل ثبوت دیا جائے مختلف ممبروں کی لاگتیں پارٹیوں کو یہ حدایت کی جائے کہ وہ اپنے یہاں پر اپرٹو سیر کو ختم کرنے کے لئے عجب تک تجویز لا رہے ہیں۔ وہ جس وقت ایسی تجویز لائیں گے۔ ہماری پارٹی کی یہاں سارے ڈیموکریٹک اپوزیشن کی مدد ان کے ساتھ ہوگا اگر سرکار یہ کہتی ہے کہ پر ٹکریا ویدی وہ ری ایکشنیز اب ادھر چلے گئے۔ ہیں تو سرکار کو چاہئے کہ ممبروں کے ساتھ ترقی پسندی کے قدم اٹھائے ممبروں کے ساتھ اب چلنے کے لئے دعوہ کو پورا کرے اس سے بہتر موقع اس کے لئے کیا آئیگا جب کہ پورے ڈیموکریٹک اپوزیشن کی سپورٹان کو حاصل ہے اور حاصل رہیگا۔

MR. SPEAKER : Now, Shri Lobo Prabhu.

SHRI LOBO PRABHU (Udipi) : There is just one minute left to one o'clock. So, may I suggest that you may defer it for the afternoon ? If you want, I shall start.

MR. SPEAKER : Then, I shall call Shri Prakash Vir Shastri now.

श्री प्रकाशवीर शास्त्री (हापुड) : अध्यक्ष महोदय, पंजाब की यह बदकिस्मती है कि आज पंजाब कटछंड कर बहुत छोटा रह गया है। मैं आपको पुराने इतिहास की याद दिलाता हूँ। एक समय वह था जब पंजाब का नाम पंजाब इसलिए रखा गया था कि पांच बड़े दरिया पंजाब में से हो कर निकलते थे। लेकिन विभाजन के बाद जब रावी, झेलम और चनाब, तीनों पकिस्तान को चले गए तो स्वाभाविक रूप से पंजाब, पंजाब न रह कर दो-आब रह गया। उस पंजाब में से भी हरयाना निकल गया। तो यह और छोटा हो गया ऐसी स्थिति में मुट्ठी भर लोगों ने लिये एक प्रसेम्बली का काम करे और एक कौंसिल भी काम करे, यह बात व्यावहारिक नहीं है। इसलिए पंजाब की विधान सभा ने यह निर्णय लिया है कि पंजाब के मन्दर कौंसिल को समाप्त कर दिया जाय और जनता की सीधी चुनी हुई संस्था प्रसेम्बली ही वहां काम करे। इसके लिए मैं पंजाब विधान सभा के कार्यकर्ताओं और सदस्यों को धन्यवाद देना चाहता हूँ। लेकिन साथ ही साथ मैं एक बात और

[श्री प्रकाश वीर शास्त्री]

भी कहना चाहता है कि जब पंजाब के अन्दर विधान परिषद् की समाप्ति पर हम विचार कर रहे हैं इस तरह के मुठ्ठी-मुठ्ठी भर लोगों के उन राज्यों को भी हम अपनी आँखों से ओझल नहीं कर सकते जहाँ आज संसदियों काम कर रही हैं और कौन्सिलें भी काम कर रही हैं।

MR. SPEAKER : He may continue after the lunch recess.

13.00 hrs.

*The Lok Sabha adjourned for Lunch
till Fourteen of the Clock.*

*The Lok Sabha reassembled after Lunch
at four minutes past Fourteen of the
Clock.*

[Shri M. B. Rana in the Chair]

PUNJAB LEGISLATIVE COUNCIL
(ABOLITION) BILL—contd.

श्री कंवर लाल गुप्ता (दिल्ली सदर) : सभापति जी, मैंने स्पीकर साहब को भी लिखा था कि दिल्ली में बिड़ला काटन मिल में परीव एक महीने से कम्प्लीट स्ट्राइक है, 6 हजार मजदूर बेकार हैं जिनकी हालत यह हो गई है कि बेचारे भूखों मर रहे हैं। मेरी आपसे प्रार्थना है कि सरकार को आप कहें कि वह मजदूरों और मालिकों को मिल करके कोई रास्ता निकाले। आज उन मजदूरों की हालत यह है कि दिल्ली के नागरिक उनके लिए घाटा इकट्ठा कर रहे हैं, उनकी फेमिलीज भूखों मर रही है और अभी तक आगे कोई काम चला नहीं है। जब तक सरकार इसमें इंटेस्ट नहीं लेगी तब तक कुछ होने वाला नहीं है। इसलिए आप मन्त्री महोदय से कहें कि उन दोनों पक्षों को बुलाकर कोई समझौता कराये इसी प्रकार कोई रास्ता निकल सकता है। इसीलए मेरी आपसे प्रार्थना है कि ये 6 हजार घादमी जाँ भूखों मर रहे हैं—यह कोई पोलिटिकल

इश्यु नहीं है। इसमें सारी लोग सहमत होंगे—उन लोगों को बचाने के लिए आप मन्त्री महोदय से कह दें तो बहुत अच्छा रहेगा।

MR. CHAIRMAN : The hon. Member's request will be conveyed to the hon. Minister concerned.

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : सभापति जी, देश में दो राज्य इस प्रकार के हैं जिन्होंने अपने यहां विधान परिषदें समाप्त करने का निश्चय किया है—एक पंजाब और दूसरा बंगाल। यद्यपि इन दोनों राज्यों की विधान सभाओं में जाँ ये संकल्प पारित हुए हैं उनकी पृष्ठभूमि में उनकी शुद्धता तो नहीं है जितनी अपेक्षित थी। क्योंकि विधान सभाओं और विधान परिषदों की यह परम्परा है कि जब कोई विधेयक विधान सभा से पारित होता है और विधान परिषद की भी स्वीकृति उसे मिल जाती है तब वह राज्यपाल के पास स्वीकृति के लिए भेजा जाता है। इन दोनों राज्यों में विधान सभा के अन्दर जो बहुमत था वह दूसरी पार्टियों का था और विधान परिषदों के अन्दर जो बहुमत था वह दूसरी पार्टियों का था। इसलिए उन्होंने उस संघर्ष को बचाने के लिए, उन दोनों राज्यों की विधान सभाओं ने निश्चय किया कि हमारे राज्यों के अन्दर विधान परिषदों को समाप्त कर दिया जाय। जैसा मैंने आप से कहा कि इन विधान परिषदों की समाप्ति का निश्चय इन दोनों राज्यों की विधान सभाओं ने कोई देश के हित में किया हो ऐसा तो मैं नहीं मानता। लेकिन मैं उसका अवश्य स्वागत करता हूँ भले ही उन्होंने किसी निजी कारण के आधार पर इस प्रकार का निर्णय लिया हो। परन्तु विधान परिषदें, केवल इन दोनों राज्यों में ही समाप्त हो बल्कि देश के अन्यो राज्यों में भी, जहाँ-जहाँ विधान परिषदें हैं, उन की भी समाप्ति की जाय। देश के ऊपर जो एक अनावश्यक व्यय हो रहा है उससे देश बच सके। इस प्रकार से मैं इसका स्वागत करता हूँ।

मेरा आपसे निवेदन है कि हमारे देश में कई राज्य आज भी इस प्रकार के हैं जिनमें विधान परिषदें नहीं हैं आसाम से लेकर पश्चिम बंगाल तक। पश्चिम बंगाल के सम्बन्ध में तो हम निश्चय ही ले चुके हैं आसाम से लेकर पश्चिम बंगाल तक जिन राज्यों में अब विधान परिषदें नहीं हैं उनकी सूची आपके सामने रखना चाहता हूँ : आसाम, गुजरात, हरियाणा, केरल, नागालैंड उड़ीसा और राजस्थान ।

एक माननीय सदस्य : और मध्य प्रदेश ।

श्री प्रकाशचोर शास्त्री : मध्य प्रदेश विधान सभा परिषद बनाने का निश्चय कर चुकी है परन्तु अभी विधान परिषद बनी नहीं है। अभी बीच में लटक रही है। तो ये इस प्रकार के राज्य हैं जिनमें विधान परिषदें न होते हुए भी उन राज्यों के प्रशासन पर या उन राज्यों में किसी प्रकार के स्थायित्व पर बिपरीत प्रभाव पड़ रहा है, ऐसा मैं नहीं मानता। इसलिए मेरे अपने विचार इस प्रकार के हैं कि जिन राज्यों के अन्दर आज विधान परिषदें हैं और यह करोड़ों रूपयों का बोझ इस देश के गरीब लोगों के कंधों पर जो पड़ता है उससे इस देश को बचाया जाये इसके लिए यदि संविधान में भी संशोधन करने की आवश्यकता हो तो वह संशोधन भी कर लेना चाहिए। बजाय इसके कि वहाँ की विधान सभायें प्रस्ताव पारित करके भेजें और तब उसके बाद यहाँ निर्णय लिये जाय। इस प्रस्ताव की व्यावहारिकता केवल पंजाब के सम्बन्ध में ही नहीं है बल्कि सारे देश के सम्बन्ध में इस प्रकार का निर्णय लिया जाना चाहिए।

दूसरी बात जो मैं विशेष रूप से कहना चाहता हूँ वह यह है कि य जो विधान परिषदें हैं और साथ में राज्य सभा भी है, इनके माध्यम से देश में एक नये प्रकार के भ्रष्टाचार का जन्म हो रहा है। उन विधान परिषदों के सदस्य बनने के लिए लोग किस प्रकार से जोड़-तोड़ और साठगांठ करते हैं, उस बात को मैं विस्तार से नहीं कहना चाहता। लेकिन सम्भवतः आप

की जानकारी में एक केस आया होगा कि बिहार के एक व्यक्ति ने राज्य सभा में सदस्य बनने के लिए किस प्रकार से सत्तारूढ़ पार्टी के कुछ सदस्यों को तोड़ा जिस समय न्यायालय के अन्दर चुनौती दी गई और न्यायालय ने उन मतों को खोल कर देखा तो पता लगा कि एक पार्टी के लोगों ने अपने अधिष्ठित प्रत्याशी को मत न दे कर के दूसरे प्रत्याशी को मत दिये। उनके पीछे पैसे का बल था और उसी आधार पर वे राज्य सभा के सदस्य निर्वाचित होकर आये इस प्रकार की घटनायें, बिहार, उत्तर प्रदेश और दूसरे राज्यों में बराबर बढ़ रही हैं। इसलिए इस प्रकार के जो अपर हाउसेज हैं जिनसे एक नये प्रकार के भ्रष्टाचार को जन्म मिल रहा है उसको रोकने के लिए अत्यन्त आवश्यकता है कि विधान परिषदों को समाप्त होना चाहिए और उसके सम्बन्ध में गम्भीरता से विचार होना चाहिए।

पंजाब के सम्बन्ध में मैं एक बात और कहना चाहता हूँ। पंजाब की विधान परिषद को समाप्त करने का प्रश्न हमारे सामने है। पंजाब की अपनी एक माहस और बहादुरी की पृष्ठभूमि है। पंजाब हमारे देश का सीमावर्ती राज्य है। पंजाब ने सन 1965 में पाकिस्तान के संघर्ष का सामना न केवल बहादुरी के साथ ही किया बल्कि उसने इस देश के स्वाभिमान की रक्षा भी की। दूसरे शब्दों में हम इस प्रकार कहते हैं कि 1962 के चीनी आक्रमण में जो इस देश का माथा नीचा हुआ था उस पाप के प्रक्षालन का कार्य सन 1965 में पंजाब की धरती पर हुआ। लेकिन उसी पंजाब के अन्दर आज कुछ स्वार्थी राजनितिज्ञों ने अपना स्वार्थ हल करने के लिए अन्य प्रकार के संघर्ष प्रारम्भ किए हैं—कोई हिन्दू के नाम पर राज्य चलाना चाहता है कोई सिख के नाम पर राज्य चलाना चाहता है और कोई पंजाबी या किसी धर्म विशेष के नाम पर राज्य बनाने का स्वप्न देखता है।

मेरा कहना यह है कि कन्द्रीय सरकार को इस प्रकार की शक्तियों और प्रवृत्तियों की

[श्री प्रकाशवीर शास्त्री]

दबाना चाहिये। जो शक्तियाँ इस प्रकार की हैं कि अपने राजनीतिक स्वार्थ पूरे करने के लिए हिन्दुओं और सिक्खों के बीच में संघर्ष पैदा करना चाहती हैं, और उन दोनों के कदीमी रिश्तों को तोड़ना चाहती हैं इस प्रकार की शक्तियाँ चाहे पंजाब में हों या देश में कहीं भी हों, उन को मिल कर दबाना चाहिये और सब को समान रूप से उस की निन्दा करनी चाहिये।

दूसरी बात पंजाब के सम्बन्ध में मुझे यह कहनी है कि अभी कुछ दिन पूर्व वहाँ पर भाषा का प्रश्न उत्पन्न हुआ। मेरा अपना विचार है कि जब भाषा के आधार पर पंजाब का विभाजन हो गया तो आज पंजाब की भाषा पंजाबी है और यह पंजाब के लोगों को निर्णय करना है कि वह पंजाबी किस लिपि के अक्षर लिखी जाये। लेकिन एक बात मैं पंजाब की सरकार से आप के माध्यम से निवेदन करना चाहता हूँ कि आज जब पंजाब के अक्षर 45 प्रतिशत लोग इस प्रकार के हैं जो यह कहते हैं कि हमारी अपनी मातृभाषा हिन्दी है तो पंजाब की सरकार को अल्पसंख्यकों की भाषा की संरक्षण देने के नाम पर दूसरी भाषा के रूप में हिन्दी को मानने में किसी प्रकार की कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिये। इस से दोनों के सम्बन्धों में मधुरता आयेगी और किसी प्रकार के अनावश्यक आन्दोलन से हमारा सीमावर्ती राज्य बचा रहेगा। जहाँ तक लिपि का सम्बन्ध है, लिपि के सम्बन्ध में मैं बलपूर्वक किसी लिपि को समाप्त करने के पक्ष में नहीं हूँ। मेरा विचार रहा है कि देश में अपनी लिपियों को सुरक्षित रखते हुए अगर प्रादेशिक भाषायें किसी एक सामान्य लिपि की वैकल्पिक लिपि के रूप में स्वीकार कर लें तो देश की अनेक भाषाओं को निकट आने में बहुत बड़ी मदद मिल सकेगी। अगर पंजाब के लोग भी इसी आधार पर विचार कर सकें तो मैं समझता हूँ कि यह पंजाबी भाषा के हित में और देश की एकता के हित में होगा।

अन्तिम बात जिस को कह कर मैं अपना भाषण समाप्त करना चाहता हूँ वह है प्रश्न जो आज पंजाब और हरियाणा में नव-व का कारण बना हुआ है, और वह है चंडीगढ़ का प्रश्न। सभापति जी, आप ने देखा होगा कि कल इस प्रश्न को लेकर यहाँ एक गर्मा गर्मी का वातावरण भी उत्पन्न हुआ। इस के लिये मैं मुख्य रूप से केन्द्रीय सरकार को दोषी मानता हूँ। सरकार की अपनी धादत है कि जो इस प्रकार के विवादास्पद प्रश्न होते हैं उन को लम्बा टालने की इस की प्रवृत्ति बन गयी है। सरकार सोचती है कि अगर कोई प्रश्न लम्बा टाला जायगा तो लोग भूल जायेंगे और अंत में तनाव स्वतः ही नहीं रहेगा। इतिहास इस बात का साक्षी है कि जिस जिस प्रश्न को सरकार ने टालना चाहा चाहे मैसूर-महाराष्ट्र का सीमा विवाद का प्रश्न हो, गोदावरी या कृष्णा के जल का झगड़ा हो, चाहे पंजाब के अक्षर चण्डीगढ़ का झगड़ा हो—सरकार ने जिस झगड़े को टालना चाहा वह झगड़ा और अधिक उग्र रूप ले कर के देश के और सरकार के सामने आया। इसलिए मैं चाहूँगा कि इस सरकार को आगे के लिए यह परम्परा डालनी चाहिये कि जब भी इस प्रकार के कोई प्रश्न आयें तो उन प्रश्नों पर दृढ़ता से विचार किया जाय और तत्काल उन का समाधान किया जाय। वर्षों तक उन प्रश्नों को लटकते हुए छोड़ कर लोगों को आपस में संघर्ष का अवसर नहीं देना चाहिये।

चण्डीगढ़ के सम्बन्ध में जब एक निष्पक्ष कमीशन बैठाया गया उस ने तीन बातों को ध्यान में रखते हुए अपनी राय दी थी। कमीशन का यह निर्णय था कि चंडीगढ़ हरियाणा को दिया जाय, भले ही वह बहुमत से निर्णय था, लेकिन यह निर्णय हरियाणा के पक्ष में था। दूसरे जो चण्डीगढ़ की जनसंख्या है उस के अक्षर किस भाषा के बोलने वाले अधिक हैं कमीशन ने उस के आंकड़े दिये हैं, उस दृष्टि से भी चण्डीगढ़ का निर्णय हरियाणा के पक्ष

में जाता है। और तीसरे इसलिए कि हरियाणा पंजाब के अंदर एक पिछड़ा हुआ क्षेत्र रहा। अब वह अगर प्रथम राज्य बन गया तो केन्द्रीय सरकार और पंजाब सरकार का दायित्व था कि हमारा एक छोटा भाई अगर किसी तरह अपने पिछड़ेपन को सुधार सकें चण्डीगढ़ को ले कर के तो हम को इस में ज्यादा रोष नहीं करना चाहिये। आखिर चण्डीगढ़ पंजाब को मिले या हरियाणा को मिले, रहेगा तो भारत में ही।

अभी परमों संसद भवन के सामने तीन, चार लाख आदमी हरियाणा से चल कर आये। क्या लाभ होगा अगर इतने ही आदमी पंजाब में चल कर आये आप अंदाजा लगायें कि यदि एक आदमी के पीछे एक रु० का भी खर्च रखा जाये तो पांच लाख रु० व्यय हरियाणा का हुआ। कल को इतना ही व्यय पंजाब वालों का हो सकता है। यह जो अनावश्यक व्यय और आन्दोलन की प्रवृत्ति देश में बराबर बढ़ती चली जा रही है इस को रोकना चाहिये। इस के लिये मेरा कहना है कि इस के ऊपर तत्काल विचार कर के इस समस्या का समाधान करना चाहिये।

जहाँ तक पंजाब का सम्बन्ध है, पहले भी यह प्रश्न आया था। कुछ दिन पहले पैसू की राजधानी पटियाला रह चुकी थी। यह पंजाब एक छोटा सा मुट्ठी भर लोगों का देश है। हिमाचल का कैरेक्टर करीब करीब वही है जो पंजाब का है। पंजाब और हिमाचल को मिला कर एक राज्य बना दिया जाय और शिमले को उस की राजधानी के रूप में परिणत कर दिया जाय।

अंग्रेजों के जमाने में शिमला उप-राजधानी थी और पंजाब और हिमाचल को मिला कर जो नया राज्य बनाया जाय उस की राजधानी शिमला बनायी जा सकती है। इस तरह से इस समस्या का समाधान हो सकता है। इसलिये मेरा कहना है कि विवादास्पद प्रश्न को टालना नहीं चाहिये जिस से देश के अंदर अनावश्यक

तनाव और संघर्ष की प्रवृत्ति लोगों में पैदा हो।

इन शब्दों के साथ मैं पंजाब की विधान सभा ने जो विधा: परिषद को समाप्त करने का निर्णय किया है उन के उस निर्णय का स्वागत करता हूँ। भले ये यह निर्णय राजनीतिक दृष्टि में हो। लेकिन मैं चाहता हूँ केन्द्रीय सरकार पंजाब और बंगाल की विधान सभाओं के प्रस्तावों को स्वीकार कर आगे अपनी ओर से भी कदम उठाए और संविधान में संशोधन करे और जिन जिन राज्यों के विधान परिषद हैं उनको तत्काल समाप्त करने की घोषणा करे।

SHRI BEDABRATA BARUA (Kaliabor): Mr. Chairman, Sir, that Punjab has become a smaller State than it was would itself justify the abolition of the upper House in Punjab. But it hardly makes a genuine argument, because a federation is based on equality of Status and if a State becomes small, it is up to the federal authorities or those States that are made into a federation to see that all the units are small or at least they are made equal in the Council of States or the Rajya Sabha. As it is, we have managed somehow to forget this principle. We have allowed the enslavement of small States by the control of the Central Government and the big States. This has unfortunately created this problem. But then I would never accept the argument that being small States they should have no second chamber. The point is, apart from the size of the States, what justification has a second chamber anywhere.

There has been a lot of intellectual debate on this point, and Harold Laski has a lot of spicy things to say about it. He said in his famous book called *The Grammar of Politics* that even for sovereign States, not to speak of the units of a federation, there can be hardly any justification for a second chamber. There can be hardly any justification because either the second chamber becomes a rubber-stamp, in which case it is not necessary, or it becomes a challenge to the lower House in which case it violates the democratic principle. It is hardly possible to have a *via media* in which a second chamber can function without

[Shri Bedabrata Barua]

thwarting the democratic principle and representative principle and still do something in legislation that cannot be done without having a second chamber as part of Parliament. Therefore, all the arguments that have been offered about the second chamber were more or less put at naught or negated in the beginning of this century, when it was very well stated that so long as we accept democracy, to accept a second chamber is to put a premium on reaction and no amount of sophistication can hide the fact that once you accept democracy and representative principle it would not absolutely do for anybody to suggest that there should be a second chamber to check autocracy of the lower House. As the argument went, there was no such thing, and in India, the constitution-makers never thought of checking the autocracy of the lower House at least in Parliament where there was some sort of check. I have no doubt that that check may begin to operate some day sometime. But where a resolution by the Joint Houses of Parliament, of both Houses and all that, is to be passed, it may become a very dramatic type of experience. But so far as the States are concerned, we have completely made them useless. The upper Houses are completely useless; they do not have financial powers or large legislative powers; they cannot possibly postpone legislation. There cannot be anything practical.

No reference to the principles of the second chamber was made. They say it was made a job-creating body, just meant to create some jobs for some people at the cost of the State exchequer. It did not sound just as well. I do not believe and I do not agree that those people who are politicians should have no job security. I think politicians also should have some job security or, the politician should be able to devote himself to the country's cause without having the fear of starvation comparatively at a young age of 40 or so.

A politician should be given a job, but the way he is given the job and the way he is maintained should be proper. We should not maintain people who would be useless.

SHRI S. S. KOTHARI (Mandsaur) :
You want a ten-year term for Lok Sabha ?

SHRI BEDABRATA BARUA : No. In some countries it is 3 years and in some countries 4 years. No one has extended it beyond five. However much we may like it, it is not there anywhere in the world.

Even the last speaker who said that the second chamber could have been useful sounded like the 19th century writers in Britain and France, who used to say about the second chamber that it is not the politicians' world but it is the aristocrats' world. If our princes also wanted some such thing we could have put them there and formed a second chamber, where they could meet once in five years and what they do would not matter at all. But we have not done it.

The second chamber is without powers. It does not have a semblance of authority. It does not represent anybody. It does not even represent the non-political people. When it does it does it with a vengeance. When there is a representation for teachers, we introduce a sort of election among professors and vitiate the atmosphere. Whenever the electorate is small, the chances of corruption are greater. It is easier to purchase a small electorate of 30 to 40 people than to corrupt a large-sized electorate. In the United States also, the idea of direct elections came about because they found in a small electorate, the village headman can be easily purchased while thousands of people cannot be easily purchased.

For all these reasons, the second chamber should go. In Punjab they have done it nicely. We should try our best to see that every State abolishes the second chamber. It is so useless, functionless and colourless. Without authority, it becomes less colourful. So far as Rajya Sabha is concerned, it is high time we persuade the entire country to think of a Rajya Sabha which would involve a federal principle. If small States need not exist, Rajya Sabha also need not exist. In America, irrespective of the size of a State, they have two members for each State in the Senate. But in the Rajya Sabha, it is not so. Manipur and U. P. do not have equal number of representatives. Unless we have that equality, in the Rajya Sabha, we do not want the Rajya Sabha also.

SHRI LOBO PRABHU (Udipi) : Mr. Chairman, the decision to abolish the Legislative Council of Punjab has been related to the economy of Rs. 6 lakhs which is spent on it. A little deeper investigation would show that this decision is related to the political disparity between the Assembly and the Council. That disparity occurred in Bengal and the West Bengal Legislative Council had to go. That disparity has now arisen in Punjab and the Council is going.

The question is whether we should expose our institutions to political manoeuvres of this kind. I would agree with my friends if the second chambers are not paying for what is spent on them, if the second chambers are the fifth wheel, they should be abolished in all States. But if you are abolishing them one by one in the States as and when they become inconvenient to the party in power, you are bringing the Constitution and democracy into contempt. It may be said here that in certain States where the political complexion of the Assembly is different from that of the Council, as in Madras and Kerala

AN HON. MEMBER : There is no Council in Kerala.

SHRI LOBO PRABHU : Yes, you would have abolished it if it were there. Now the second chamber continues as a matter of sufferance. The moment it becomes inconvenient in any State it will have to go. I presume in Madras the second chamber has been properly disciplined about its own existence.

SHRI SEZHIYAN (Kumbakonam) : It is going to be expanded.

SHRI LOBO PRABHU : This is political gerrymandering.

I would not agree with my hon. friend, Shri Barua, that second chambers are unnecessary. He quoted Laski. He was my tutor when I was in England and I have great respect for him. But he seems to have taken a jaundiced view of the second chamber because of the fact that the second chamber he had in mind was the House of Lords which was standing in the way of the House of Commons. We have to consider the second chamber with reference to article 169 of our Constitution. Our second

chamber is not constituted of princes, as Shri Barua has said. One-third of it is constituted by representatives of local bodies. The question is whether you want the local bodies to be represented separately in the legislature. There would be a large volume of opinion in favour of the view that in a democracy the local bodies should be represented in the legislature. It would not be fair to confuse this representation with the representation of peers in the House of Lords. This is a necessary representation because of the special position occupied by the local bodies in our country.

Then, one-twelfth of the second chamber consists of representatives of graduates. I hope no one will object to education being a qualification for election to the second chamber. In fact, it would have been very good if we had education as a qualification for election even to this House. If we can get at least some members on the basis of education, representing educated people, I do not think there can be any argument against it.

Then, you have representation for teachers. We have been consistently denigrating the institution of teachers. Is it our intention to deprive them of this little representation? It is true that somebody who is not a teacher may stand for election. Then, you can prescribe by rule that only a serving teacher can stand for election. Similarly, those who represent local bodies must be serving local body men.

SHRI SEZHIYAN : But that is not possible. A teacher cannot stand for election before resigning his post.

SHRI LOBO PRABHU : Then he can come back to the profession. But he must be a serving teacher.

These are representation by election. Then there is representation by nomination. One-twelfth of the members would be nominated to represent art, literature, science, co-operation and social service.

Here again, no one will deny that these professions and departments of life are not capable of facing the hurlyburly of an election. You cannot expect an artist or a scientist, who is immersed in his research, to go along and stand for election. If you want their

[Shri Lobo Prabhu]

representation and assistance, you must have them by this process.

I would say again that some improvement is possible here. At the moment, what is known as an artist or a scientist is entirely left to the discretion of Government. As far as I know Government thinks of artists who are only politicians. I do not want to recall the nominations to the Rajya Sabha last time, but we must have artists nominated by artists. There should be panels for the consideration of Government; Government should not be free to put politicians as artists into the Rajya Sabha because if they do that, they will not be representing artists but will be representing politicians who have dabbled in art or who know a little of science.

SHRI RANDHIR SINGH (Rohtak) : The Harayana people are very good artists. We do not have any in the Upper House.

AN HON. MEMBER : You are a specimen.

SHRI P. R. THAKUR (Nabadwip) : These people can be consulted without having any representation in the Legislature.

SHRI LOBO PRABHU : You also can be consulted and you need not be here. We will go and consult you in your house. The Legislature is a place where you are by a right.

I will now come to a class to which some objection can be properly taken, namely, the election of one-third of the members by the members of the Legislative Assemblies. To this body the objection properly applies that there is corruption, that unless you pay for a vote the Assembly member generally does not give it to the proper person. Secondly, there is the objection to this class that it follows the party complexion. You are representing the same pattern in the Upper House as in the Lower House. So, if it is possible, we should completely eliminate this third section, namely, that of election by the Assemblies, because it is unnecessary and is capable of being perverted and misused. Otherwise, I would like to join issue with my hon. friend that the second Chamber is

unnecessary. There is a necessity for a second Chamber.

SHRI E. K. NAYANAR (Palghat) : This Bill is for abolition of the second Chamber.

SHRI LOBO PRABHU : I will educate you in due course.

There is a justification for a second Chamber, firstly, to provide special representation of the kind that I mentioned, secondly, to provide representation for those who would not ordinarily be elected and, thirdly, to provide a brake on the vagaries and extravagances of Lower House. I need not tell you what vagaries and extravagances occur in the Lower House.

SHRI RANDHIR SINGH : We are not extravagant people.

SHRI BAL RAJ MADHOK (South Delhi) : All the Young Turks come from Rajya Sabha.

SHRI LOBO PRABHU : You are not extravagant.

Unless we get a House which can be steady, sober and studious, I think, democracy cannot function properly, specially in this country. We must have a body which is not reactionary. I think, as my hon. friend here mentioned, Rajya Sabha contributes all the Young Turks, socialism or Communism that exists in our Legislature.

AN HON. MEMBER : Not all; a few of them.

SHRI LOBO PRABHU : Therefore you want a body like this.

Fourthly, there should be deceleration in legislation. You do not want legislation to go so fast that people have no time to examine it properly. The Upper House provides this forum of deceleration to vet legislation which is hastily passed like, for instance, the Bank Nationalisation Act.

With these remarks about improving the condition of our second chambers, whether Rajya Sabha or Councils in the States, I would like to support the Bill. I would

like to say that as possible this House should very seriously consider how to make the second chamber more functional. The people are anxious to get rid of these bodies because they are not functional, there is no proper representation and proper authority which only comes from proper representation. Therefore, let us take this opportunity—this is the second abolition of the upper chamber—before there is the third abolition to see whether we cannot make our second chambers more functional.

श्री श्रीकार लाल बोहरा (चित्तौड़गढ़) : सभापति महोदय, हमारे मित्र श्री लोबो प्रभु ने अभी जो वक्तव्य दिया है उसमें यह भली भाँति स्पष्ट हो जाता है कि वह चाहते हैं कि विधान सभाओं में जनता के प्रतिनिधियों के ऊपर किन्हीं वर्ग विशेषों का प्रातिनिधित्व कायम रहना चाहिये। यह बड़ा भारी बुनियादी सवाल है जिस पर सदन को गम्भीरता से विचार करना चाहिए। विधान सभाओं में सैकिड चैम्बरज की व्यवस्था क्यों की गई, इसके इतिहास में यदि हम जायें तो हमें अंग्रेजों के जमाने की याद आ जाती है। अंग्रेज महाप्रभुओं ने खान बहादुरों, नवाब बहादुरों, राय बहादुरों और ऐसे ही कुछ लोगों की शान शोकन को बनाये रखने के लिए और उनको राजनीतिक महत्ता प्रदान करने के लिए, उनकी राजनीतिक महत्ता बनाये रखने के लिए, सैकिड चैम्बरज की व्यवस्था की थी। ऐसी कोई आवश्यकता उस समय नहीं थी कि हम जनता के प्रतिनिधियों को चैक करने के लिए इस तरह की कोई व्यवस्था करें। हाउस आफ लार्ड्स को आप लें। इंग्लैंड भी जनतंत्र है। वहाँ पर हाउस आफ लार्ड्स का निर्माण धर्मोपगोत्रों का, वैस्टिड इटरेस्ट्स को रिप्रिजेंटेशन देने के लिए और उनको शान शोकन बनाये रखने के लिए, उनको महत्ता प्रदान करने के लिए किया गया था और वह चला आ रहा है। उसी तरह में अंग्रेजों ने अपने ब्रिटिश साम्राज्य के समय में हमारे देश के अन्दर इस तरह के सैकिड चैम्बर की व्यवस्था की थी। इनको

बनाये रखने के लिए वकालत करके श्री लोबो प्रभु ने जो सत्य है उसको प्रकट कर दिया है कि किस तरह से वह आई० सी० एस० वर्ग के जो लोग हैं जो विशिष्ट वर्ग के लोग हैं, समाज में शान शोकन से रहने वाले जो वर्ग हैं, उनकी आवाज अलग ढंग से बलन्द करवाना चाहते हैं। मैं समझता हूँ कि जबकि हमारे यहाँ जनता की सरकार है, जनतांत्रिक ढंग से चुनी हुई सरकार है, अपने ढंग से हम इसको चलाना चाहते हैं, तो ऐसी अवस्था में मैं नहीं समझता हूँ कि जो जनता की आवाज बुलन्द करते हैं, उनकी आवाज के ऊपर भी कोई आवाज है जो यहाँ या दूसरे चैम्बर के द्वारा अभिव्यक्त होनी चाहिए।

हमारे देश में आजादी के बाद कहीं भी सैकिड चैम्बरज की व्यवस्था नहीं हुई है। राजस्थान में कोई सैकिड चैम्बर नहीं है। और भी कई राज्य हैं जहाँ कोई सैकिड चैम्बर नहीं है। हम एक ही चैम्बर से काम चला रहे हैं और एक ही चैम्बर होते हुए भी हमें कोई दिक्कत नहीं हुई है, जनता की आवाज वहाँ पर बड़े आराम से बुलन्द होनी है, जनता को सही प्रतिनिधित्व मिलता है। इस वास्ते मैं समझता हूँ कि सैकिड चैम्बरज रखना एक अनावश्यक बान है, एक अर्थ हीन बान है, खजाने पर एक प्रकार का बोझ है। इनको समाप्त करके हम जनता के पैसे की जनता के धन की बचत करेंगे।

आप जरा दृष्टिपात करें कि सैकिड चैम्बरज में होता क्या है? वे करते क्या हैं? सैकिड चैम्बर को कोई हम तरह का अधिकार नहीं है कि जो निचला सदन है उसके ऊपर वह कोई बहुत बड़ा नियंत्रण रख सके। जो काम निचले सदन में होता है, उसी की पुनरावृत्ति वहाँ भी होती है, वही काम वहाँ भी होता है, वही चर्चा सैकिड चैम्बर में भी होती है। वहाँ पर होते कौन लोग हैं? वहाँ वे लोग होते हैं जिनका जनता के सुख दुख में कोई सम्बन्ध नहीं होता है, कोई सरोकार नहीं होता है, जो

[श्री श्रीकारलाल बोहरा]

जनता की समस्याएँ नहीं समझते हैं। वहाँ लोग अपने ढंग से, अपने स्वार्थों का तथा अपने वर्ग के स्वार्थों का प्रतिनिधित्व करने के लिए आते हैं। हम अपने देश में एक नई समाजवादी व्यवस्था की स्थापना करना चाहते हैं, वर्ग रहित समाज की व्यवस्था करना चाहते हैं। उस में मैं नहीं समझता हूँ कि इनकी कोई आवश्यकता है। सैकिड चैम्बर की आने वाले युग में, समाजवादी समाज की स्थापना के युग में कोई आवश्यकता नहीं है। सैकिड चैम्बर निहायत ही अर्थहीन बे-बुनियाद और अनावश्यक है और उनकी जितनी जल्दी हो हमें समाप्त कर देना चाहिए।

पश्चिम बंगाल ने सैकिड चैम्बर को समाप्त किया या करने का फैसला किया। पंजाब ने इसके पक्ष में फैसला किया। मैं समझता हूँ कि वह समय जल्दी आना चाहिए जब हम देश में सब जगह पार्लियामेंट के द्वारा यह निश्चय करें कि सैकिड चैम्बर की हमें कहीं भी आवश्यकता नहीं है।

जहाँ तक केन्द्र में राज्य सभा का सम्बन्ध है, मैं निवेदन करना चाहता हूँ कि हमारे यहाँ संघ सरकार है और इसलिए जहाँ केन्द्र में देश की जनता के प्रतिनिधित्व की आवश्यकता है, वहाँ देश के अलग-अलग राज्यों के हितों का प्रतिनिधित्व करने के लिए दूसरे सदन को रखना भी बहुत आवश्यक है।

मैं श्री बरुघा की इस बात से सहमत हूँ कि चूँकि हमारे यहाँ एक संघ सरकार है, इस लिए राज्य सभा में विभिन्न राज्यों का प्रतिनिधित्व समानता के आधार पर होना चाहिए, जैसा कि अमरीका और अन्य देशों में होता है। हम लोक सभा के सदस्य तो सीधे जनता से चुनकर आते ही हैं, लेकिन यदि राज्य सभा में भी अलग-अलग राज्यों का प्रतिनिधित्व उनकी जनसंख्या के

आधार पर होना है, तो वह न केवल एक बड़ी भारी असंगति होगी, बल्कि दुरुपेक्षण भी होगा। उदाहरण के लिए आप उत्तर प्रदेश और नागालैंड को ले लीजिये। उन दोनों राज्यों का अपना अपना महत्व है। यद्यपि उन की जनसंख्या में बहुत अन्तर है, लेकिन राज्यों के नाते दोनों की अपनी अपनी समस्याएँ हैं। यदि राज्य सभा में राज्यों को उनकी जनसंख्या के आधार पर प्रतिनिधित्व दिया जाता है, तो नागालैंड जैसे छोटे राज्य कभी भी अपने राज्यीय हितों का सही और समुचित संरक्षण प्राप्त नहीं कर सकेंगे।

मैं समझता हूँ कि जहाँ तक केन्द्र का सवाल है, दूसरे सदन को समाप्त करने की दलील बेबुनियाद है। देश के सब राज्यों को प्रतिनिधित्व देने के लिए दूसरे सदन अर्थात् राज्य सभा, को बरकरार रखना बिल्कुल उचित और आवश्यक है, किन्तु वह प्रतिनिधित्व समानता के आधार पर होना चाहिए, न कि राज्यों की जनसंख्या के आधार पर। मैं माननीय सदस्य, श्री लॉबो प्रभु, की इस बात से सहमत नहीं हूँ कि राज्य सभा में विभिन्न वर्गों को प्रतिनिधित्व दिया जाना चाहिए। आज के कानटेक्स्ट, संदर्भ, में वह कतई उचित नहीं है। हाँ, राज्यों में दूसरे सदन को बनाये रखना अर्थहीन है, क्योंकि उनसे राज्यों की अर्थ-व्यवस्था पर एक अनावश्यक भार पड़ता है और यह देश की जनता के प्रति अन्याय है।

*SHRI K. M. ABRAHAM (Kottayam) : Mr. Chairman, Sir, the use of four more languages has been allowed in this House. Using that facility I am happy to speak today in my mother tongue, Malayalam.

The Bill that is before the House seeks to abolish the Legislative Council in Punjab. A Resolution has been passed by the Legislative Assembly there abolishing the Legislative Council. This Bill has been brought here by the hon. Law Minister to give legal

force to that. This is a progressive measure and therefore I welcome it.

Why do I say it is a progressive measure? It is said that actually in the Upper Chamber different sections of our society are represented. I am not of the opinion that because of that there should be Upper Chambers in our country. Certain hon. Members who spoke yesterday said that for a thorough consideration of the legislations passed by the Lower House Upper Chambers are needed. I do not agree with that view. Our Assemblies and Parliament do not take decisions which require any re-consideration. Without a thorough examination they do not pass any law. Therefore, Sir, in my opinion these Upper Chambers are not needed. Our Assemblies and Parliament which consist of Members directly elected by our people are responsible for taking the necessary steps with a view to fulfilling the desires and aspirations of our people. Wherever we have such Assemblies and when we have the Lok Sabha here there is no need to have Upper Chambers with power to question the decisions of the lower chambers.

As I said earlier, a resolution has been passed in the Punjab Legislative Assembly abolishing the Legislative Council there. As far as I know it was prompted to take this step because West Bengal abolished its Council. There are Legislative Councils in many more States. They should also be abolished and necessary steps for that should be taken in the concerned Assemblies.

I was really pained to hear my hon. friend from Madras, belonging to the D.M.K. Party, saying here that they are trying to increase the membership of their Upper Chamber. In this twentieth century when instead of accepting a progressive measure abolishing the Upper Chamber they are trying to increase the membership it cannot be said as a progressive step.

Sir, instead of leaving it to the State Assemblies to decide whether they should have Councils or not and then bringing separate Bills here in respect of each State I would request the hon. Law Minister to bring a Bill amending the Constitution. I am sure he will say that they are in a minority and they may not get the necessary support. But I can assure him that if he brings a Bill now he will get the necessary support. Therefore I request him to bring such a Bill immediately.

The hon. Minister may argue that the Rajya Sabha is necessary because whereas in the Lok Sabha there are Members elected directly by the people in Rajya Sabha the different States are represented. I must tell him that in the Lok Sabha also there are Members from the different States. Therefore a separate House for giving representation to the States is not necessary. If he still says that the Rajya Sabha is necessary I would like to suggest that its constitution should be changed so that the States are given equal representation.

In the end, Sir, I would like to conclude by saying that the Rajya Sabha and Legislative Councils should be abolished and a Bill amending the Constitution on that line should be brought here. With that request to the hon. Minister, on behalf of my Party, I support this Bill.

SHRI E. K. NAYANAR (Palghat) : Sir, while Mr. Abraham was speaking in Malayalam, they have not taken down the minutes. We got the information from the Lok Sabha office that speeches in Kannada, Malayalam, Tamil and Telugu will be translated into English and Hindi. But we want to know whether any arrangement has been made to take shorthand notes of speeches in these languages. In that bulletin which we received from the Lok Sabha office, position regarding taking down shorthand notes is not clearly indicated.

MR. CHAIRMAN : There are no shorthand-writers in all these languages here. So... (Interruptions)

SOME HON. MEMBERS : Why?

SHRI A. SREEDHARAN (Badagara) : We have given them sufficient notice, Sir. Why should they not arrange for its being taken down?

SHRI RANDHIR SINGH : Some arrangement must be made. We are all one with you.

SHRI A. SREEDHARAN : It should not be done in such a half-hearted fashion.

SHRI RANDHIR SINGH : You may also give your co-operation. Government must give their full co-operation.

MR. CHAIRMAN : But we have tape-recording of all speeches.

SHRI E. K. NAYANAR : But the translation in English can be taken.

MR. CHAIRMAN : It will be translated from all the languages into Hindi and English.

SHRI E. K. NAYANAR : There are fourteen languages in which Members are entitled to speak on the Floor of the House.

SHRI RANDHIR SINGH : At least for these four languages, arrangements must be made immediately. We are all one on this.

MR. CHAIRMAN : All the speeches are tape-recorded and they will be transcribed later on. We have no shorthand-writers in all the languages.

SHRI E. K. NAYANAR : We shall get them.

SHRI A. SREEDHARAN : We shall provide them.

MR. CHAIRMAN : Hon. Members can discuss the matter with the Hon. Speaker.

SHRI A. SREEDHARAN : Tape-record is not the original record. According to the rules, original record must be kept ; and tape-record is not dependable ; it is not acceptable that way as a record.

SHRI SEZHIYAN : May I make one submission ? When Members make speeches in Hindi or English, those speeches are being taken down in Hindi or English, as the case may be. Supposing a Member speaks in some other language, then you say that the tape-recording will do. Why should the same method not be followed for speeches in Hindi and English also ? When you allow a certain method for speeches in English and Hindi, the same method can be adopted for speeches in the other languages also. If the Secretariat feels difficulty in providing stenographers, we are ready to provide them.

SHRI RANDHIR SINGH : This matter should be expedited. That is the sense of the

House. It must be conveyed to the Hon. Speaker. The House is one on this that arrangements must be made immediately for this.

SHRI N. SREEKANTAN NAIR (Quilon) : We want a ruling from the Chairman. The Chairman is here and we want his decision.

SHRI A. SREEDHARAN : We want a ruling from the Chair and not from the hon. Member.

SHRI RANDHIR SINGH : I am helping my hon. friends.

SHRI N. SREEKANTAN NAIR : We are thankful to him for his support, but we want the decision from the Chairman.

SHRI RANDHIR SINGH : I think my hon. friends have misunderstood me. I am one with the whole House that arrangement must be made immediately and no delay can be brooked in this.

MR. CHAIRMAN : Now, Shri A. S. Saigal.

SHRI B. K. DASCHOWDHARY (Cooch-Bihar) : I had made a submission that similar arrangements should be made for simultaneous interpretation in other languages also, like Bengali and Assamese, for instance.

MR. CHAIRMAN : That is not before the House.

SHRI B. K. DASCHOWDHARY : I would like to know whether any action has been taken on that matter.

MR. CHAIRMAN : Let him not interrupt the proceedings of the House in this matter. He can see the Hon. Speaker and discuss the matter, and let us see if he is able to help the hon. Member.

AN HON. MEMBER : He must be able to help.

श्री प्र० सि० सहगल (बिलासपुर) : अध्यक्ष महोदय, पंजाब कौंसिल के वॉलीशन का जो बिल आप के सामने है... (व्यवधान)...

अभी आप के सामने हमारे मित्र ने अपनी भाषा मलयालम में जो भाषण दिया, मैं उम्मीद करता हूँ कि हमें कोई न कोई इस की व्यवस्था करनी चाहिए जब आप ने ट्रांसलेशन की व्यवस्था की है तो आप को थोड़ा सा टाइम इस में देना चाहिए और इस के लिए भी कोई न कोई व्यवस्था करनी चाहिए ताकि उन को कोई दिक्कत न हो...

MR. CHAIRMAN : I called upon the hon. Member to speak on the Bill and not on this question.

SHRI A. S. SAIGAL : These things are going on. So, What are we to do ?

MR. CHAIRMAN : I would now allow him to speak on this. If he wants to speak on the Bill, he may do so.

श्री अ० सि० सहगल : मैं इस बिल का समर्थन करने के लिए खड़ा हुआ हूँ। मेरे दोस्त लोबो प्रभु ने यह बताया आप से कि जो बहुत से इन्टरेस्ट है जैसा कि टीचर्स का है या और जो हमारे लोग हैं उन का रेप्रेजेंटेशन यहां पर नहीं होता है...

SHRI N. SREEKANTAN NAIR : On a point of order.

MR. CHAIRMAN : If the point of order is only for giving information, then I shall not allow it. If the point of order is really a point of order, then I shall hear it....

SHRI N. SREEKANTAN NAIR : I want your ruling on one matter.

MR. CHAIRMAN : If the point of order proves false, then I shall have to see what can be done.

श्री अ० सि० सहगल : तो मैं उन से कहना चाहूँगा कि यदि उन को पार्लियामेंट में रखना है और पार्लियामेंट चलेगी तो दोनों हाउसों, राज्य सभा और लोक सभा मिल कर के पार्लियामेंट बनती है, ऐसी स्थिति में आप बेशक यह कह सकते हैं कि जो पार्लियामेंट, राज्य-

सभा, मैं नामिनेटेड मेम्बर आते हैं उन की संख्या बढ़ा दी जाए, वह आप दस की जगह पच्चीस कर दी जाए ताकि जो इन्टरेस्ट दूसरी जगह से आएंगे उन को वह रेप्रेजेंट कर सकें। लेकिन यह जरूरी है क्योंकि कि आज आप देखिए नागालैंड में, केरल में, आन्ध्र में, मध्य प्रदेश में, राजस्थान में और हरयाना में दो चैंम्बरस नहीं हैं। इसलिए यह हमारे लिए जरूरी है कि यदि दूसरे प्रान्तों के लोग आते हैं सामने कि इस को खत्म कर दिया जाय तो बेशक मैं इस बात से सहमत हूँ कि जिस तरह से पंजाब ने किया है उसी तरह से हर एक प्रान्त को कर लेना चाहिए। लेकिन मैं सहमत इसलिए नहीं होऊँगा कि आप यहां का जो राज्य सभा का चैंम्बर है उस को खत्म करें। इस के फंवर में मैं नहीं हूँ। उस का कारण है कि आप के जो हमारे इन्टरेस्ट्स हैं उन को रेप्रेजेंट नहीं करेंगे, आप सारे चैंम्बरस को खत्म करेंगे तो यहां नामिनेशंस को बढ़ाइए और नामिनेशंस बढ़ा कर उन को रेप्रेजेंटेशन दीजिए। तब मैं बेशक इस से सहमत हूँ। दूसरे किस्म के लोगों को बराबर यहां पर जगह दीजिए।

जिस तरह से हाउस आफ लाड्स का यहां पर जिक्र किया, हाउस आफ लाड्स यहां पर नहीं है। हमारे यहां पर लोग चुन कर आते हैं और जो लेजिस्लेटिव असेम्बली के भाई हैं वह इन को चुन कर भेजते हैं। हाउस आफ लाड्स में और इस में बहुत फर्क है। इसलिए मैं निवेदन करूँगा कि आप की जो राज्य-सभा है, हाउस आफ लाड्स के बराबर इस को कह सकते हैं लेकिन हाउस आफ लाड्स यह नहीं है। यहाँ पर हर किस्म के लोग आते हैं। इसलिए मैं आप से कहूँगा कि जो भी हमारे यहां पर व्यवस्था यह व्यवस्था आज कितने दिनों से इस देश में चल रही है, एक बहुत उच्च कोटि की व्यवस्था है और इस व्यवस्था को रख कर के हमें और आप को चलना है और देश को आगे ले जाना है। यदि हम सोशलिस्टिक प्रोग्राम को चलाना चाहते हैं

[श्री अ० सं० सहगल]

तो हमारे लिए यह सब से बड़ी चीज है कि जो एक चैम्बर हो हर एक जगह पर हर एक प्रान्त में उस के जरिए से आप अपने विचारों को जो भी यहां पर रखे जायें अपने सोशललिस्टिक प्रोग्राम के लिए, उस को बराबर उन प्रान्तों में ले जायें। इस में कोई दिक्कत आप को आयेगी नहीं। हां, जैसा कि मेरे दोस्तों ने बताया कि जहां पर आज हमारा राज है या मान लीजिए कि कांग्रेस बैठी हुई है गवर्नमेंट में उन प्रान्तों में भी उसे खत्म कर देना चाहिए, तो यह वहां उस प्रान्तों के लोगों का तथा विधान सभा का मत ले र के यदि वह खत्म कर देना चाहते हैं तो बेशक उस को खत्म कर दें, हमें उस में कोई एतराज नहीं होगा।

जहाँ तक भाषा के सवाल के बारे में कहा उन्होंने, मैं कहता हूँ कि भाषा के आधार पर कुछ प्रांत बने हैं। वहां पर उस भाषा का प्रचलित होना अति आवश्यक हमें प्रतीत होता है। हां दूसरी लैंग्वेज यदि हिन्दी को देना चाहते हैं तो दे दीजिए। लेकिन पंजाबी के आधार पर पंजाब बना हुआ है तो वहां उन की भाषा पंजाबी, गुरुमुखी, को बराबर हमें प्रोत्साहन देना होगा। इस के बाद दूसरी भाषा रखना चाहते हैं तो बेशक आप हिन्दी और अंग्रेजी रख सकते हैं। लेकिन हमें प्रान्तीय भाषाओं को भी आगे ले जाना है। इसलिए यह जरूरी है कि हम प्रान्तीय भाषाओं को भी आगे ले जाना चाहते हैं तो हमें उन भाषाओं को चाहे वह तामिल हो, तेलगू हो, कन्नड़ हो या बंगाली हो, इन सब को बराबर प्रोत्साहन देना चाहिए। इन शब्दों के साथ मैं इसका समर्थन करता हूँ।

श्री शिव चन्द्र भा (मधुबनी) : सभापति जी, पंजाब लेजिस्लेटिव कौंसिल एबान्निशन बिल जो हमारे सामने है इसका मैं तहे दिल से स्वागत करता हूँ। पिछले सत्र में बंगाल लेजिस्लेटिव कौंसिल के विघटन का विधेयक आया था

और हम लोगों ने उसकी प्रजोर तारीफ की थी। आज उसी रूप में पंजाब लेजिस्लेटिव कौंसिल के विघटन का विधेयक हमारे सामने है और हम आज फिर उसका स्वागत करते हैं। देश में यह जो ट्रेन्ड है, यह जो अपर हाउसेज को खत्म करने का ट्रेन्ड है, यह बहुत ही अच्छा ट्रेन्ड है। हर एक जो देश की प्रगति में विश्वास करता है उसको इसका स्वागत करना चाहिए। यह दूसरा चैम्बर चाहे राज्यों में हो या बन्दर के स्तर पर हो, राज्य सभा के रूप में यह एक सुपरफ्लुअम चीज हो गये हैं, एक्स्ट्रावेगेंट हो गये हैं। राजनैतिक पंडितों का कहना है कि यदि मेकेंड चैम्बर लोअर चैम्बर की सहमति में है तो सुपरफ्लुअम है, यह वह इससे विपरीत है उससे सहमति में नहीं है तो मिस्चीवस है, खुराफाती है। दोनों तरह से अपर चैम्बर का होना जरूरी नहीं है। वह एक सुपरफ्लुअस बाडी हो गया है। जब इसकी शुरुआत हुई थी, जनतंत्र के इतिहास पर आप गौर करेंगे तो आपको माफ हो जायेगा कि उन दिनों में थोड़ी बहुत हिस्टोरिकल नेसेसिटी थी। मैं तफसील में नहीं जाना चाहता हूँ, लेकिन उन दिनों जबकि सैकण्ड चैम्बर की शुरुआत हुई थी, उसकी हिस्टोरिकल नेसेसिटी थी, लेकिन आज के मानव इतिहास में इसकी हिस्टोरिकल नेसेसिटी नहीं है। इसका ख़ात्मा होना चाहिए, चाहे राज्य स्तर पर हो या राज्य सभा के रूप में हो। लेकिन जब तक आप इसको खत्म नहीं करते हैं, तब तक राज्य सभा की जो बनावट है, वह बराबरी के आधार पर होनी चाहिये। जिसके मुनासिब मेरा एक विधेयक पिछले सत्र में भी था और उस पर बहस भी हुई थी।

15.00 hrs.

लेकिन एक बात जो इन्होंने उठाई है और जिसको हम महसूस भी करते हैं कि हमारे देश में जनतंत्र का जो रूप हमारे सामने है वह डायरेक्ट डेमोक्रेसी नहीं है, इन-डायरेक्ट

डेमोक्रेसी है। डायरेक्ट डेमोक्रेसी का जो शानदार आदर्श है, यानी सब लोग इकट्ठे हो कर अपनी किस्मत का फैसला करें, यह सबसे बड़ा आदर्श है, लेकिन हमारे देश की बड़ी आबादी की वजह से यह सम्भव नहीं है, इसी-लिये इन-डायरेक्ट डेमोक्रेसी का रास्ता हम अख्तियार करने हैं। लेकिन, सभापति महोदय, आपको यह बात माननी होगी लार्जस्ट पार्टी-सिपेशन यानी जनता इसमें ज्यादा हाथ नहीं बटा पाती है। जनतंत्र की गाड़ी को आगे चलाने के लिये उसमें जनता का ज्यादा से ज्यादा हाथ हो इसके लिये कोई दूसरा रास्ता हमें अख्तियार करना होगा, जिसमें अपर-हाउस न हो, लेकिन जनता का लार्जस्ट-पार्टी-सिपेशन हो। यह कैसे होगा? इसके लिये हमारे रहनुमा डा० राम मधोहर लोहिया ने फोर्थ-पिलर स्टेट की बात उठाई थी। डा० लोहिया का कहना था कि जनतंत्र में ज्यादा से ज्यादा डायरेक्ट डेमोक्रेसी को लाने के लिये चार-खम्बों का राज्य हो, एक खम्बा केन्द्र है, दूसरा प्रान्त है, तीसरा जिले में और चौथा गांव में होना चाहिये।

15.01 hrs.

[Mr. Speaker in the Chair]

जिस तरह से आपका यहाँ पर रिप्रेजेंटेशन है, उसी तरह से यदि इन चारों जगहों पर हम नुमाइन्दगी का सिलमिला बना दें हैं, जनता का भवन हम बना देते हैं, जनतंत्र के छोटे-छोटे भवन बना देने हैं तो उससे जनता का पार्टी-सिपेशन ज्यादा होगा। इसीलिये डा० लोहिया ने फोर्थ पिलर की बात उठाई थी। इसमें अपर-चेम्बर की जरूरत नहीं रहती है लेकिन साथ ही साथ इस नई प्रणाली से जनता का पार्टी-सिपेशन ज्यादा होगा, आम जनता का सहयोग ज्यादा प्राप्त होगा तथा इसमें जनतंत्र का रूप और भी ज्यादा सुबसूरत और वृहद होगा। इसलिये अपर-चेम्बर यानी दूसरे हाउस का ख़ात्मा करना चाहिये तथा फोर्थ-पिलर स्टेट की जो भावना है उस पर कानून मंत्री जी को ठे

दिमाग से सोचना चाहिये। यदि आप ईमानदारी से देश में समाजवाद लाना चाहते हैं और चाहते हैं कि जनतंत्र भी कायम रहे तो आपको एक न एक दिन इस विचार पर, फोर्थ-पिलर स्टेट पर आना होगा। राज्यों में इस समय पंचायतें चल रही हैं, लेकिन उनका क्या रूप है। ये पंचायतें एक खिलौना मात्र बन गई हैं, कुछ लोगों के हाथ में हैं, जो गांवों के दीनतमन्द और खुशहाल लोग हैं, उन्होंने इन पंचायतों को खिलौना बना रखा है, वह रूप प्रच्छा नहीं है। लेकिन इसके मायने यह नहीं होते हैं कि पंचायती राज्य का सिलसिला चल रहा है वह सिलसिला खत्म हो जाय, हमें उसको भी कायम रखना है। हिन्दुस्तान के इतिहास में यह परम्परा सदियों से चलनी आ रही है, लेकिन जिला स्तर के पैमाने पर आज आप क्या पाते हैं? जिला स्तर पर पंचायती राज्य के रूप में कोई सिस्टम नहीं है, फफसरों की हुकूमत है, डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट और कलेक्टर की हुकूमत है, फफसर-शाही और व्यूरोक्रसी की हुकूमत है जो जनतंत्र का गला घोटते हैं। यहाँ से भले ही हम आवाज उठाते हैं, लेकिन जिला स्तर पर जाकर देखें, कहां तक जनतंत्र आगे चलता है, जनता कहां तक हाथ बटाती है। राज्य के स्तर पर तो है—विधान सभा है, उसमें लोग नुमाइन्दे बन कर जाते हैं, यहाँ भी नुमाइन्दे चुनकर आते हैं, लेकिन जिला स्तर पर कोई व्यवस्था नहीं है। इसलिए सारी व्यवस्था को कमिस्टेट बनाने के लिये फोर्थ पिलर स्टेट बनाई जानी चाहिये, जिस में जनता के सहयोग की ज्यादा से ज्यादा गुंजाइश हो। लेकिन अपर चेम्बर की जरूरत नहीं होगी, यह सुपरफ्लुअस है, एक्स्ट्रैवेगेंस है, लीडर क्लास की बाड़ी है, चाहे राज्य के स्तर पर हो या राज्य सभा के रूप में हो। जितनी जल्दी हम उनका ख़ात्मा करेंगे, देश के पैसे को बचावेंगे, जनतंत्र को दूषित होने से बचावेंगे और अपनी जनतंत्र की गाड़ी को आगे बढ़ा सकेंगे।

इन शब्दों के साथ मैं इस विधेयक का तहे दिल से स्वागत करता हूँ और चाहूँगा कि मंत्री

[श्री शिव चन्द्र भा]

महोदय कोय पिलर स्टेट की भावना पर गम्भीरता से विचार करें।

SHRI JAIPAL SINGH (Khunti) : Mr. Speaker, I do not know whether I am speaking from the place where I should be because there have been so many changes, and many members have been worrying about my own personal change—in my appearance.

When we are thinking of this Bill, if at all we are democratic, there should be no opposition to this at all. But we must understand the meaning of democracy, when we are talking such a lot about it in this House. In this House, there are a couple of nominated members. In the other House, there are quite a few of them. Does democracy mean election or nomination? That is the issue. If the Upper Houses, wherever they are, are elected, then they are democratically chosen. If they are indirectly elected, it is again underdemocratic. Indirect election is not democracy at all. Then let us all be directly elected.

The whole thing is this. We have to make up our mind as to how representative members of the legislatures in the States and here have to be. We have about 250 million voters here. I have been a member right from the very beginning. Many of my voters do not know where Delhi is.

AN HON. MEMBER : Bring them here.

SHRI JAIPAL SINGH : I do not belong to Kanpur.

SHRI S. M. BANERJEE (Kanpur) : I have not interrupted him. We belong to Balia, Azamgarh.

SHRI JAIPAL SINGH : Balia people are all mad. That was why they got thrashed by the British, and rightly so.

Let us talk a little bit of sense. This peculiar sort of arguments being trotted out here rather madden me. What do we mean? Can you be representative of anybody else but yourself? What does representation mean? Do you represent me?

SHRI S. M. BANERJEE : No.

SHRI JAIPAL SINGH : You cannot.

SHRI JYOTIRMOY BASU (Diamond Harbour) : I dare not.

SHRI JAIPAL SINGH : He dare not because he has not got the guts to represent me.

What I feel is that it is not a question of the House of Lords. There is one mad fellow from Bilaspur here. He does not know the meaning of the 'House of Lords'.

SHRI E. K. NAYANAR : Is this parliamentary?

SHRI JAIPAL SINGH : We have the 'House of Ladies here, not the House of Lords'.

SHRI S. M. BANERJEE : The lady is a Minister : the lord has no place.

SHRI JAIPAL SINGH : The hon. Member from Kanpur—I should like to be polite to him because he is very much interested in tanneries (*Interruptions.*) This question of democracy is also a question of expense. If I may be forgiven for putting it that way, the whole lot of us here are wasting thousands of rupees in our mad behaviour here. There are people in the galleries who come and see how we work...

MR. SPEAKER : That can be talked among ourselves, not in their presence.

SHRI JAIPAL SINGH : They are much wiser; they are better observers. They see how we are conducting ourselves. Would you like me to tell you how much it costs our country for us to sit for a day... (*Interruptions.*) I am not supporting a second chamber as a nominated body, but certainly as an elected body. Somebody said about four houses and five houses. Heaven knows how many houses he wants... (An Hon. Member : Pillars). Why not let everybody have enough? I support this in the sense that if we want to be democratic let us be honest to ourselves and make representation as representative as possible. It can be possible only if we reduce the minimum of representation and make it as small as

possible. For a country like this, it cannot reduce the number of the electorate. Ours is a large country. For example, I believe the constituency I come from has a stretch of hundreds of miles. I really do not know. They do not know where Delhi is... (*Interruptions.*) I do not want to be unkind to hon. Members. But I should like them to be honourable in their behaviour; I wish they were honourable. I have ceased to be dishonourable; that is why I am an hon. Member.

SHRI S. N. MISRA (Kannauj) : All the aspects of the case have been discussed here. One aspect of the case on which no light was thrown is : consistency. There must be consistency. It is only in the last session we accepted the recommendation of West Bengal Assembly and abolished the Council there. There should be constituency in what we do and without further discussion this Bill should be accepted.

MR. SPEAKER : Shri Sreedharan.

SHRI A. SREEDHARAN (Badagara) : *started speaking in Malayalam.*

MR. SPEAKER : You know English very well.

SHRI A. SREEDHARAN : But I know Malayalam better.

MR. SPEAKER : Just a minute. There are Members who used to speak Hindi or English very well. This arrangement was just made to help those who do not know to speak in these two languages. I think you will take what I say in the right spirit. If this continues and I have to listen to 14 different languages, God help us. I will just keep dumb over it. That is all.

SHRI P. P. ESTHOSE (Mavattupuzha) : But, Sir, the interpretation arrangement is excellent. (*Interruption.*)

MR. SPEAKER : Order, order. How can one expect everything overnight? It is good that we have started something; but we have not done it cent per cent; we will do it. We are trying to improve it. But you should help me. Those gentlemen who are able to speak and understand English or Hindi, why should they fall into this? I do

not mind; you can go on speaking, but it is only my request.

श्री यशवन्त सिंह कुशावाह (भिन्ड) : माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा निवेदन है कि माननीय सदस्य प्रपोजी के बजाय यदि अपनी मातृ भाषा में बोलते हैं तो यह बहुत अच्छी बात है। उसका ट्रांसलेशन होकर हमारे पास आ रहा है जो कि हमारी समझ में भी आ रहा है। कृपया उनको अपनी भाषा में बोलने दीजिये।

MR. SPEAKER : We do not know what the country is missing.

SHRI SHEO NARAIN (Basti) : Where is the Cabinet? No Cabinet Minister is there. This is not proper.

SHRI P. P. ESTHOSE : He is a gentleman who knows English also, but he always speaks in Hindi. When Shri Sreedharan speaks in Malayalam, we get through the ear-phones a very excellent English translation.

SHRI SHEO NARAIN : Where is the Cabinet?

MR. SPEAKER : One Minister is sitting. (*Interruption.*)

SHRI S. KANDAPPAN (Mettur) : Sir, I want to make a brief submission. With due respect to your observations, I would like to point out one thing. There is the question of the record. You were not here when this issue was raised. As far as our speaking in our mother-tongue is concerned, there are two aspects. One, we can better express ourselves in our mother-tongue; another thing is the sentimental aspect about which you know. You know since our freedom, our Members from the Hindi belt had the privilege of expressing themselves in their mother-tongue, and after two decades, we are getting that privilege. I hope that the Lok Sabha Secretariat would not grudge it and will improve upon the facilities that are already there.

With regard to the records, I have been raising this issue of having a sort of bilingual record in our library as well as those papers which are circulated to Members. What

[Shri S. Kandappan]

happens at present is this. Those speeches that are made in English are recorded in English, and those delivered in Hindi are recorded in Hindi. For those who do not understand Hindi, the problem is that we have got to refer to certain things in the library. It is not possible for us to get a translation then and there nor can we seek some Hindi friends to get it translated for us.

I remember when the DMK group represented by our leader, Shri Anbazhagan met you in the Chamber soon after you were elected to this high office, you promised us that you will look into the matter and see to it that we get a sort of unilingual translation.

Here, I would like to make another submission. Now, the interpretation is coming into effect only in respect of four languages. It is very difficult, however efficient the interpreter might be, to have a clear translation. So, I would plead with you that, availing ourselves of the facility that is there for tape-recording, you should see to it that an exact and clear translation of the original speeches delivered, whether they are in Tamil, Malayalam, Telugu or Kannada, is made available to Members either in English or in Hindi or in both the languages.

MR. SPEAKER : I am very happy that we have made some humble beginning, and I am very hopeful that we would try to extend it and try to get good staff. But for the time being, we are facing a few difficulties. I will call a meeting of the representatives of all the four States and I shall try to understand your difficulties. I shall also try to make you understand my own difficulties. But please do not give it a colour. We are all interested in hearing and understanding each other. If we are to speak in our own languages, it is very difficult for the Chair. I will sit here deaf and dumb listening to your speeches. I would be very grateful if those who know English very well can speak in English till we have some very efficient and competent staff. Every mechanical equipment is available. For the time being, we have acceded to your request and made a beginning.

SHRI SHEO NARAIN : There is no

Cabinet minister on the treasury benches. We must have a Cabinet minister.

SHRI S. M. BANERJEE : An ex-Cabinet minister is there by your side.

*SHRI A. SREEDHARAN (Badagara) : Respected Mr. Speaker, I heartily welcome this Bill seeking to abolish the Legislative Council of the State of Punjab. As in several other matters the inspiration for this measure also has come from my State. When I am speaking in Malayalam, I am reminded of 2 lines by Shri Rabindera Nath Tagore who was a poet of international fame. He had said, "When the heart wishes to pay its debts it must have a coin with a stamp of its own kingdom on it." That, Sir, is the mother tongue.

Sir, the opportunity I have got to speak in my mother tongue is as a result of some experiments conducted on democracy. It is only another part of the same experiment which prompted the Government to come forward with this measure seeking to abolish the Legislative Council of the Punjab. Sir, this Upper Houses have a historical background based on this background we have adopted a method suitable to our country. We have borrowed these Upper Houses from the British Parliamentary system. Basically, there is fundamental difference between our democracy and that of Britain. The British system of democracy was evolved as a result of series of experiments but in India democracy was born out of a national revolution. In the Round Table Conference held in 1931 in London, Mahatma Gandhi, the father of the nation, had explained into detail the role of Upper Houses in the democratic set up of India. He said in the Conference, "Personally I am of opinion that we can do with one Chamber only and we can do it to great advantage. We will certainly save a great deal of expenses if we can bring ourselves to believe that we shall do with one Chamber". This was first implemented by abolishing the Upper Chamber in Travancore. In the recent past we came across an inspiring experiment in the Indian democracy. A party which was returned to power on the same symbol, on the same ballot and on the same manifesto

*The original speech was delivered in Malayalam.

has been split into ruling party and the opposition. This was hat-trick of Mr. Nijalingappa. Similarly, when I speak of Upper Chambers, two issues come to my mind. One is how one can give shape to the representative character. Second is how to share the power in a democracy. Regarding the representative character many eloquent speeches have taken place on the Floor of the House. A progressive democracy accepts only the people's representation. In the Monarchical Britain if there has been an Upper House, it is due to the peculiar situation prevailing there. Upper Houses have been existing as a place for giving berths to those who did not want to get in the Legislature by means of a direct elections. In the name of Upper Houses, there has been a lot of political chicanery. Firstly, we have seen instances where people who could not face a direct election getting into the Upper Chamber through its back door. One example I can cite.

In the 1962 General Elections the then Mysore Chief Minister Mr. Nijalingappa was defeated. When he was defeated in the election he put his proxy in the Chair. That proxy had openly said that he was like Bharata who ruled over Ayudhya in the name of Shri Rama. This Mr. Nijalingappa who was defeated in the General Election approached one Mr. Poorna Nand who was elected from Bhagalpore Constituency. He told Mr. Poorna Nand that if he could vacate his seat in the Legislature he could get into Legislature from that Constituency. He made Mr. Poorna Nand resign his seat in the Assembly and was offered a seat in the Council. These Upper Chambers thus give plenty of scope for such people to get into the Legislature. Mr. Lobo Prabhu who preceded me said that the Upper Chambers are necessary to give representations to all sections of society such as teachers, scientists and eminent technocrats. In my own state there is no Upper Chamber. But substantial section of the representatives of the Assembly in my state consists of teachers. If you examine the Constitution of any Legislature Assembly, you will come to know that the above argument is hollow. In this Lok Sabha itself the leader of Marxists party Mr. A. K. Gopalan was a teacher himself. In this House there are so many people who have reached the height of fame in various walks of life.

All of them have come here with the support of the people. India has always respected wisdom and learning. I any one says that in order to give cognition to wisdom and learning we should have soon chambers in this country which has produced Kalidas and Profulla Chandra Bose that displays only his ignorance of India's cultural heritage.

Today this new experiment is undertaken only at the instance of State Governments. A Rajya Sabha is still here at the Centre and these people here do not have the courage to abolish it. Without abolishing the Rajya Sabha, they are now saying: "We are bringing forward this progressive measure". We are not fools to believe that statement. In this case, it was Bengal and Punjab which gave a lead and this example which was shown by them will, I hope, be followed up by this Government at least at this latest stage. It is only non-Congress Governments like those of Punjab and Bengal which are implementing the ideal which Gandhiji had in mind. The Congress Party which has been in power for the last 22 years has not been able to abolish Second Chambers.

This measure is indeed a noble measure and as pointed out by my honourable friend only a Constitutional Amendment Bill can bring about a radical reform in our democratic set up and hoping that this will prove to be the first step in that direction, I heartily welcome this measure once again.

SHRI ABDUL GHANI DAR (Gurgaon):
Spoke in Punjabi.

MR. SPEAKER: *Spoke in Punjabi.*

MR. SURENDRANATH DWIVEDI:
Sir, he belongs to Haryana. Let him speak in Harayanvi.

SHRI ABDUL GHANI DAR: I do not agree with my hon. friend. (*Interruption*). What is Haryana? What is Uttar Pradesh? This is *desh*.

पंजाबी में मैं इसलिए बोला कि पंजाबी भी चौदह जवानों में से एक है जो कि कौमी जवान है और मेरे माँ बाप की जवान है। मुझे इस बात का फख है कि बावजूद ठेठ पंजाबी होने के मैं हमेशा उनकी पीठ लगा कर घाता हूँ, हरा कर घाता हूँ और उनके यहां से घाता हूँ। इन

[श्री अब्दुल गनी डार]

जैसे न जाने कितने पैदा हुए। मैंने बड़ों-बड़ों को ठिकाने लगा दिया। मुझे तो हंसी आनी है कि :

मुंडे कुड़ियों का भुंड यारो कट्ठा हो गया हुकूमत का चलाना की ठट्ठा हो गया।

Youngsters have joined hands. Is it a joke to run the Government वह कहते हैं कि दिनेश और राजा कर्ण मिह के सहारे हुकूमत को चलायेंगे, कम्यूनिस्टों और अकालियों के सहारे हुकूमत को चलायेंगे।

श्री रणधीर सिंह : हमें आपका पता है !

श्री अब्दुल गनी डार : आपकी माइनागिटी गवर्नमेंट है जो आज चल रही है।

श्री रणधीर सिंह : कल के आदमी, इनको सब पता हो गया।

श्री अब्दुल गनी डार : वह खुद कहते हैं कि वह बहुत बड़े आदमी हैं।

श्री रणधीर सिंह : आप अपने मुंह से कह रहे हैं।

श्री अब्दुल गनी डार : आप जैसे मैंने न जाने कितने देखे हैं ... (व्यवधान)...

अध्यक्ष महोदय : मेरी समझ में नहीं आता कि बैठे-बैठे आप लोगों को न जाने क्या हो जाता है।

श्री अब्दुल गनी डार : मैं तो आपको मुखातिब कर रहा था।

अध्यक्ष महोदय : आप बोलिए।

श्री अब्दुल गनी डार : मैं सिर्फ आपसे यह पर्ज कर रहा था कि आप भी पंजाब में मेम्बर थे और मैं भी मेम्बर था जब इसका जन्म हुआ। उस वक्त मैजोरिटी ने मुख्य मंत्री को लिखकर दिया था कि इस हाउस की जरूरत नहीं है। लेकिन उस वक्त खयाल यह था कि

सेंटर किसी तरह से कमजोर न हो। सेंटर की ताकत में किसी तरह की कमी न आये। यह भी खयाल था कि उस पर चेंक रहना चाहिए। वहां पर गवर्नर की तरफ से दूसरी तरफ से भी कुछ गेरु होनी चाहिए। इस तरह से अमेम्बली अगर कोई गली भी करे तो वह उस गली को दुस्त कर सकेंगे।

लेकिन उस वक्त पंजाब बहुत बड़ा था। हरियाणा भी उसमें था और हिमाचल प्रदेश का बहुत बड़ा हिस्सा, जिसको कागड़ा कहते हैं, वह भी उसमें था। इसलिए खर्च को ध्यान में न रखते हुए, बड़े मकसद को ध्यान में रखते हुए यानि यह कि सेंटर मजबूत रहे, हमने इस बात को माना था और आपने भी स्वीकार कर लिया था। आप वहां स्पीकर भी रहे चुके हैं और मिनिस्टर भी रहे चुके हैं। आज पंजाब ने, जहां अकालियों की हुकूमत है यह कदम उठाया है। मैं अकालियों और कम्यूनिस्टों को मुबारकबाद देता हूं कि उन्होंने यह कदम उठाया है। और उठाकर सरकार को खुद मौका दिया देखने का कि बावजूद इसके हम अक्मरियन में हैं हम इतनी बड़ी चीज ला सकते हैं।

श्री रणधीर सिंह : जनसभ को क्यों नहीं कहते ?

श्री अब्दुल गनी डार : लेकिन बावजूद इसके वह मैजोरिटी में है, इस खयाल से कि देश का हित इसमें है और खामख्वाह रुपया बरबाद न हो, रिपिटीशन न हो उन्होंने कहा कि इस हाउस की जरूरत नहीं। मैं उन्हें बधाई देता हूं, मैं सरकार को भी बधाई देता हूं कि उसने जो मुतफिका राय थी उसको लव वयक कहा।

लेकिन आपकी गैर-हाजिरी में मेरे भाई पमरसिंह सहगल ने, वह मुझे बहुत प्यारे हैं, कहा कि राज्य सभा रहनी चाहिए। श्री लोको प्रभु ने भी यह खयाल दिया कि कौंसिलों में

लोकल वाडीज पंचायतों और एजुकेशनिस्ट्स वंगरह की नुमाइन्दगी की जरूरत है। जो नामजद होते हैं उनमें आर्टिस्ट्स भी होते हैं, साइंटिस्ट्स होते हैं, सोशल सर्विस वाले भी होते हैं। जो लोगों की खिदमत करने हैं, उनको लिया जाता है। इस वकत श्री सहगल ने बहुत अच्छी बात कही कि राज्य सभा में नामिनेशन बढ़ा दिया जाये ताकि इन लोगों की काफी नुमाइन्दगी भी हो जाये। मैं उन पर कुर्बान जाऊं कितनी सादगी से नामिनेशन को बढ़ा लेना चाहते हैं ताकि राज्य सभा को बिल्कुल खिलौना बना दिया जाये और प्रधान मन्त्री जिसको चाहें उसको उसमें ले आयें।

बहरहाल मुझे उसको खिलौना बनाने की तकलीफ नहीं है क्योंकि उनकी जो अकमरियन थी। अब वह अकिलयत में बदल गई है और कल यह अकिलयत शायद इधर तशरीफ ले आये। अगर कम्प्यूनिस्ट भी उनके साथ इधर आ जायें तो कोई ताज्जुब की बात नहीं है क्योंकि कम्प्यूनिस्ट समझदार हैं। वह पहले साथ देते हैं और साथ देकर उसके बाद गिराते हैं, जैसे उन्होंने बंगाल में किया। बंगाल की समस्या को श्री रणधीर सिंह समझ सकते हैं। मेरे भाई बहुत काबिल एडवोकेट हैं, वह समझ सकते हैं कि कम्प्यूनिस्ट किस तरह ताकत में आये और वह माथो तसे तुंग या चाऊ एन लाई न हो कर भी किस तरह से राज्य कर रहे हैं; मैं उनको समझाना चाहता हूँ कि पहले उन्होंने लोगों के दिलों पर राज्य किया, लोगों को अपने साथ मिला लिया। क्यों मिला लिया? क्योंकि:

मुंडे कुंडियो का मुंड यारो कट्ठा हो गया
हुकूमत का चलाना की ठट्ठा हो गया।

यह यंग्स्टर्स कहते हैं कि बुड्डों को मार दो, बुड्डों की जरूरत नहीं है। उनको समझ में आना चाहिए कि बुड्डों को भी होना चाहिए।

जहां बानी से है

दुश्वार तरकारे जहाँ बीनी,

जिगरखून हो तो चरमे दिल में

शोनी है नजर पंदा।

हुकूमत चलाना कोई आसान बात नहीं है आज जो लोग यहाँ पर हैं उनको सोचना चाहिए कि जहाँ कम्प्यूनिस्टों ने सरकारें हैं वहाँ ही अपर हाउस उड़ाये जायेंगे। आपको एक दिन प्रमैडमेंट लाना होगा और कांस्टिट्यूशन को बदलना होगा यह कहा जायेगा कि राज्य सभा की कोई जरूरत नहीं है। आईन अपना है। आईन हमने बनाया है। पर कोई मजहब की किताब नहीं है वेद मुकद्दस नहीं है, गुरु ग्रन्थ नहीं है, इंजील मुबारक नहीं है। यह हमारा बनाया हुआ आईन है।

अगर हम ईमानदारी से सोचें तो राज्य सभा कोई कांस्टिट्यूशन नहीं कर सकी है, कोई नई बात नहीं कर सकी है, नई बात नहीं ला सकी है, इम्प्रूव नहीं कर सकी है, हमारी नालायकियों पर परदा डाल सकी है तो हमें समझा नहीं सकी है। हकीरान में जब जो समाजवादी लाय हूँ वे उधर बैठे तो वे अपर हाउस को नहीं रहने देंगे। श्री प्रमरसिंह सहगल की बात नहीं चलेगी। राज्य सभा जरूर जायेगी और इसको वह मान लें। अगर वह नहीं मानत हैं तो अब भी वक्त है कि उनका मान लना चाहिए।

करीब है यारों राज महशर

छिपवा कुश्ता का खून क्या कर

जो चुप रहेंगी जवान खजर

लहू पुकारेगा आस्तीन का।

وہابی میں اس لئے ہلا کر پنجابی بھی چورہ زبانوں میں سے ایک ہے جو کہ
قوی زبان ہے اور میرے ماں باپ کی زبان ہے۔ مجھے اس بات کا فخر ہے کہ
بادجوہر علیہ السلام پنجابی بولنے کے ہیں۔ ان کا پیٹھ ٹاکر آتا ہے۔ مگر اگر آتا ہے
اور ان کے یہاں سے آتا ہے۔ ان جیسے نہ جانے کتنے پیدا ہوئے۔ میں نے
بڑوں بڑوں کو ٹھکانے لگا دیا۔ مجھے تو سن آتی ہے کہ
سنڈے کوڑیوں کا حبشہ یا روکھا ہو گیا
حکومت کا چلانا کی ٹھٹھ ہو گیا

Youngsters have joined hands. Is it a
joke to run the Government?

وہ کہتے ہیں کہ دیش اور راجا کن سنگھ کے سہارے حکومت چلائیں گے۔ کیونسٹوں اور اکائیوں کے سہارے حکومت چلائیں گے۔

شری رندھیر سنگھ۔ میں آؤں۔

شری عبدالغنی ڈار۔ آپ کی مشاورت پر گورنمنٹ ہے جو آج میں رہی ہے۔ شری رندھیر سنگھ کی آؤی۔ ان کو سب پتہ ہو گیا۔

شری عبدالغنی ڈار وہ خود کہتے ہیں کہ وہ بہت بڑے آدمی ہیں۔

شری رندھیر سنگھ۔ آپ اپنے سرے کہہ رہے ہیں۔

شری عبدالغنی ڈار۔ آپ جیسے میں نے نہ جانے کتنے دیکھے ہیں (پردھان) ادھیش مہوڑے۔ میری کچھ میں ہیں آتا کہ کچھ کچھ آپ لوگوں کو نہ جانے کیا ہو جاتا ہے۔

شری عبدالغنی ڈار میں تو آپ کو مخاطب کر رہا تھا۔

ادھیش مہوڑے۔ آپ بولے۔

شری عبدالغنی ڈار۔ میں صرف آپ سے یہ عرض کر رہا تھا کہ آپ بھی پنجاب میں ممبر تھے اور میں بھی ممبر تھا جس سے اس کا جنم ہوا اس وقت بیماری نے کھدے سڑی کو کھ کر دیا تھا کہ اس ہڈی کی ضرورت ہیں یہ لیکن اس وقت خیال یہ تھا کہ سینٹر کی طرح نہ کمزور نہ ہو۔ سینٹر کی طاقت کسی طرح کی کی نہ آئے۔ یہ میں خیال تھا کہ اس پر چیک رہنا چاہئے۔ وہاں پر ٹرنر کی طرف سے دوسری طرف سے بھی کچھ رک ہوئی چاہئے۔ اس طرح سے آسٹریلگر کوئی غلطی نہیں کرے تو وہ اس غلطی کو درست کر سکیں گے۔

لیکن اس وقت یہ سب بہت بڑا تھا۔ ہریا نہ میں اس میں تھا اور ہاجل پڑی کا بہت بڑا حصہ جس کو انکڑا کہتے ہیں۔ وہ بھی اس میں تھا۔ اس نے خرچ کو دھیان میں نہ رکھتے ہوئے۔ بڑے مقصد کو دھیان میں رکھتے ہوئے یعنی یہ سینٹر مضبوط رہے۔ ہم نے اس بات کو مانا تھا اور آپ نے بھی سولی کر لیا تھا۔ آپ وہاں آپسکر بھی رہ چکے ہیں اور مشرقی رہ چکے ہیں۔ آج پنجاب نے جہاں اکائیوں کی حکومت ہے۔ یہ قدم اٹھایا ہے۔ میں اکائیوں اور کیونسٹوں کو ساکھ دیا ہوں کہ انھوں نے یہ قدم اٹھایا اور انھیں سارا کا خود موقع دیا۔ دکھانے کا باوجود کہ یہ کم اکثریت میں ہیں مگر اتنی بڑا چیز لائے ہیں شری رندھیر سنگھ۔ جن سنگھ کو کیوں نہیں کہتے۔

شری عبدالغنی ڈار۔ لیکن باوجود اس کے کہ وہ بیماری میں ہیں اس خیال سے کہ دیش کا بہت اس میں ہے اور خواہ مخواہ دوسرے برباد نہ ہو۔ ریشینی نہ ہو انھوں نے کہا کہ اس ہڈی کی ضرورت نہیں۔ میں انھیں یہ بتا رہا ہوں میں سب کو میں یہ بتا رہا ہوں کہ اس نے جو متفقہ رائے تھی اس کو بیک کہا۔

لیکن آپ کی غیر حاضری میں میرے بھائی سردار امر سنگھ سہگل نے وہ کچھ بہت پیارے ہیں۔ کہہ کر راجیہ سبھا میں چاہئے۔ شری لوہر پرمیو نے بھی یہ خیال دیا کہ کوسلوں میں لوکل باڈیز پانچا ئٹوں اور ایکو کیسٹنڈ وغیرہ نمائندگی کی ضرورت ہے۔ جو نامزد ہوتے ہیں ان میں آؤش بھی ہوتے ہیں سائنٹس ہوتے ہیں۔ سوشل سروس والے بھی ہوتے ہیں۔ جو لوگوں کی خدمت کرتے ہیں۔ ان کو کیا جانا ہے۔ اس وقت شری سہگل نے بہت اچھی بات کہی کہ راجیہ سبھا میں نائیمینٹس ڈیہا دیا جائے تاکہ ان لوگوں کی کافی نمائندگی ہو جو آج میں ہیں پر قرنہاڈن کسٹی سادگی سے نائیمینٹس کو ڈیہا دینا چاہئے ہیں تاکہ راجیہ سبھا

کو بالکل کھلوانا بنا دیا جائے اور پردھان منتری جن راجیاں اس کو اس میں لے کر آج ہر حال اس کو کھلوانا سے ان کی تعلیم نہیں ہے کیونکہ ان کی اکثریت تھی اب وہ اقلیت میں بدل گئی ہے اور کل یہ اقلیت شاید ادھر تشریف لے آئے۔ اگر کیونسٹ بھی ان کے ساتھ ادھر آجائیں تو کوئی تعجب کی بات نہیں ہے۔ کیونکہ کیونسٹ کھدار ہیں وہ اپنے ساتھ دیتے ہیں اور ساتھ دے کر اس کے بعد کرتے ہیں۔ جیسے انھوں نے بنگال میں کیا۔ بنگال کی سیاہی کو شری رندھیر سنگھ کھ سکتے ہیں۔ میرے بھائی بہت قابل ایڈوکیٹ ہیں۔ وہ کچھ سکتے ہیں کہ کیونسٹ کسی طرح طاقت میں آئے اور وہ طوطے کنگ گیا چاد میں لائی نہ ہو کر کسی کسی طرح سے راجیہ کر رہے ہیں۔ میں ان کو کھانا چاہتا ہوں کہ اپنے انھوں نے لوگوں کے دلوں پر راج کر لیا۔ لوگوں کو اپنے ساتھ ملا لیا۔ کیوں ملایا کیونکہ

منڈے، کوڑیوں کا جھنڈ پڑ رہا تھا، ہرنیب حکومت، چا چلانا کی محکم ہو گیا

یہ بنگلہ شرس کہتے ہیں کہ بڑھوں کو مار دو۔ بڑھوں کی ضرورت نہیں ہے۔ ان کو کچھ میں آنا چاہئے کہ بڑھوں کو بھی ہونا چاہئے۔

جہاں باقی سے ہے دشوار تر کا رہے جہاں یعنی جگر خو ہو تو چٹھے دلی میں ہوتی ہے نظر سید

حکومت چلانا کوئی آسان بات نہیں ہے آج جو لوگ یہاں پر ہیں ان کو سوچنا چاہئے کہ جہاں کیونسٹوں کی سرکاری نہیں وہاں ہی اپر ہڈی آج رہا ہے آپ کو ایک دن اینڈ منسٹ ڈائریکٹر اور کانسٹیبل ٹریننگ کو پرنسپل ہنگامہ سبھا سبھا کے راجیہ سبھا کی کوئی ضرورت نہیں ہے۔ آئیں اپنا اپنے آئیں جن نے بنایا ہے وہ کوئی مذہبی کتاب نہیں ہے۔ وہ یہ مقصد نہیں ہے جو کہ نہیں ہے۔ انجیل مارک نہیں ہے یہ ہمارا بنایا ہوا آئیں ہے۔ انجیل مارک لکھا ہے سرچھی قرار دیا ہے کہ کوئی کانسٹیبل نہیں کر سکا ہے۔ کوئی نئی بات نہیں کر سکی ہے۔ نئی بات نہیں لاسکا ہے۔ امیر وہ نہیں کر سکی ہے۔ چارٹی لائیو پر پردہ ڈالی ہے۔ تو ہمیں سمجھنا نہیں سکی ہے۔ حقیقت میں جب جولا جواک لوگ ہیں وہ ادھر بیٹھیں گے۔ تو وہ اپر ہڈی کو نہیں رہنے دیں گے۔ کئی اسٹنگھ سہگل کی بات نہیں ہے گی۔ راجیہ سبھا مزدور جائے گی۔ اور اس کو ان میں۔ اگر وہ نہیں مانتے تو اب بعد وقت ہے کہ ان کو مان لینا چاہئے۔

قریب ہے تاکہ روزِ عشر
چھپے گاشتِ دھونِ بیکر
جو چپ رہے گی زبانِ بھر
بھر پکارے گا آستین کا

SHRI J. N. HAZARIKA (Dibrugarh) : I rise to support the Bill because the people of Punjab want the abolition of the Legislative Council. The abolition or continuation of any Legislative Council is the concern of the State itself and it does not concern the entire country. The people of Punjab want that it should be abolished. Therefore, I support it.

There are a lot of arguments for and against the existence of the Second Chamber. One of the reasons on which the existence of the Second Chamber is justified is the theory of checks and balances. All students of history and politics know that there are both the sides for the existence of the Second Chamber. It is necessary sometimes even at the cost of democracy also because it gives an opportunity to the Government to review a matter passed by a democratic legislature. Everything done in democratic legislature may not always be correct and perfect. Therefore, a second thought is necessary for which the Second Chamber is provided. One of my hon. friends has said that the Second Chamber provides rehabilitation for the defeated candidates. Actually that is not so though it is being utilised not only in one case which was referred to by one of my hon. friends—Mr. Mohanlal Gautam—but also in two or three more cases, namely, Mr. Ajit Prasad Jain and Mr. Malaviya who were defeated in the elections, were taken in the Rajya Sabha. I am not very much concerned how people go there and all that. In the past in our country the Second Chamber was necessary to give representation to those who were unrepresented in the democratic legislature; certain people could not be represented in the elected legislature and they could be well accommodated in the Second Chamber. As some of my hon. friends have said, sometimes persons who really have to be represented in the democratic legislature in the interest of the country who are not otherwise represented, have to be accommodated in the other Chambers so that the country may get the

benefit out of their representation. So, in our Central Legislature here, we have got two Chambers. But, on one point I cannot agree. Government may have a legislation or may have the Constitution amended so that any community or any section of the country whose representatives are nominated by the President now, need not necessarily be represented in the democratic legislature or the Lok Sabha. If they are not elected in future, they should be represented in the Rajya Sabha because their presence sometimes disturbs the balance of the House at the time of Division in the Democratic House. Therefore, in our country in the Lok Sabha when there are representatives who are nominated, they should go and they should be given representation in the Rajya Sabha.

I do not agree with my friend, Shri Bedabrata Barua who spoke earlier that the size of the State does not matter for having a second Chamber. It always matters from the point of view of viability of that particular State. One of the viabilities is finance. Therefore, the size of the State is always counted. It is not always based on principles. Sometimes on some principles one can justify a second Chamber and on the ground of practicability also. Therefore, it depends upon the people in a particular State whether they would like to have the Legislative Council continue or not and if they want it, we should support it.

With these few words I support the Bill

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF LAW AND IN THE DEPARTMENT OF SOCIAL WELFARE (SHRI M. YUNUS SALEEM) : Mr. Speaker Sir, I am grateful to you for giving me a chance to say a few words in reply to the points raised by different hon. Members. I am really very much grateful to all the hon. Members who have unanimously supported this Bill. There was not a single Member who oppose it. Therefore, I am very grateful to all of them.

But a few proposals have been placed before this House for consideration. All the Members have unanimously expressed their view that they are in favour of the abolition of the Legislative Councils from the States. But it is within the purview of the State legislation. There are only

[Shri S. M. Yunus]

some States which have been excluded and where there are no Legislative Councils. But in all the other States there are Legislative Councils by virtue of the amendment introduced in the Constitution from time to time. Now, if the States are coming forward with proposals that their Legislative Councils may be abolished, we are considering their recommendations and wherever such a resolution passed by the Legislative Assembly of that particular State as provided in Article 169 of the Constitution is received by us, we waste no time in taking active action and the Bill is prepared and introduced for consideration of the House. So, wherever there is any proposal to that effect, it shall receive the consideration of the Government.

One hon. Member from Tamil Nadu belonging to DMK expressed a grievance that the State of Tamil Nadu has sent a resolution of the Assembly recommending an increase in the number of members of the Legislative Council.

A similar Resolution or Proposal was also received by the Government from the Maharashtra State and both these proposals were considered by the Cabinet and they are still under consideration and some suitable action will be taken very soon.

Therefore, so far as that question is concerned, there is nothing to worry.

Now, as regards the question of the abolition of the Rajya Sabha, some hon. Members have expressed the view that the institution of Rajya Sabha is not necessary, it is an unnecessary Chamber and that it should be abolished.

Sir, the question of abolition of the Rajya Sabha is not as simple as that of the legislative council of the State. Whereas the legislative council could be abolished simply on the basis of a Resolution passed by the Assembly of that particular State, this is not the case with respect to the Rajya Sabha. For Rajya Sabha, amendment to Article 80 of the Constitution has got to be considered. I can assure hon. Members that this suggestion will also receive consideration from the Government when properly placed for this purpose.

There is nothing more to be replied to and I once again thank the hon. Members who have given support to this Bill.

MR. SPEAKER : I think all of us should adopt the Bill rather than taking more time. Actually we have taken thrice as much time as was scheduled for it.

The question is :

"That the Bill to provide for the abolition of the Legislative Council of the State of Punjab and for matters supplemental, incidental and consequential thereto, be taken into consideration."

The motion was adopted.

MR. SPEAKER : The question is :

"That clause 2 stand part of the Bill."

The motion was adopted.

Clause 2 was added to the Bill.

Clauses 3 to 9 were added to the Bill.

MR. SPEAKER : Now, the question is :

"That Clause 1, the Enacting Formula and the Title stand part of the Bill."

The motion was adopted.

Clause 1, the Enacting Formula and the Title were added to the Bill.

SHRI M. YUNUS SALEEM : Sir, I move :

"That the Bill be passed."

MR. SPEAKER : Motion moved :

"That the Bill be passed."

SHRI S. N. MISRA (Kanauj) : There is one constitutional difficulty that you have. Article 168 provides that for every State there shall be a Legislature which shall consist of the Governor ; and in the State of Punjab, two Houses. Article 169(2) provides that any law referred to in sub-clause (1) shall contain such provision for the amendment of the Constitution, as may be necessary to give effect to the provision of the law. Therefore, I suggest, from Article 168 (a) the word 'Punjab' should be deleted.

MR. SPEAKER : I am told, all these difficulties were gone into and they are quite aware of it.

श्री श्रीचन्द्र गोयल (चण्डीगढ़) : अध्यक्ष महोदय, जिस विधान परिषद् को समाप्त करने के लिए यह विधेयक लाया गया है, मैं स्वयं दो बार उस का सदस्य रहा हूँ। मुझे यह भी मालूम है कि उस सदन का कान्ट्रीब्यूशन सराफ़नीय रहा है, परन्तु सिद्धान्त रूप में मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि आज जितना धन हम को इस दूसरे सदन को कायम रखने के लिए व्यय करना पड़ता है वह आज हमारा देश उठा सकने में असमर्थ है और उस व्यय की तुलना में दूसरे सदन की उपयोगिता नहीं के बराबर है। जब अंग्रेजों के जमानों में बाई-केमरल लेजिस्लेचर, दोहरे विधान मंडल, की प्रथा चली थी, तो उस समय शायद उद्देश्य यह था कि अगर चिन्ता सदन कोई गलती करता है, तो ऊपर वाला सदन उस की दुरुस्ती कर सके। मैं ने मान आठ गाल तक पंजाब की विधान परिषद् का कार्य देखा है। उस काल में शायद दो तीन ऐसे प्रसंग आये होंगे, जब उस में कुछ विधेयकों पर संशोधन उत्पन्न किये गये जो कि बाद में विधान सभा को स्वीकार करने पड़े।

दूसरे सदनों की स्थापना के पीछे एक उद्देश्य यह था कि जो व्यक्ति विज्ञान, कला, समाज-सेवा के क्षेत्र में विशेष स्थान रखने हैं या किसी अन्य विषय के विशेषज्ञ हैं, चूँकि चुनाव के द्वारा उन्हें वहाँ पहुँचने का अवसर नहीं मिलता है, इसलिए उन्हें दूसरे सदन में स्थान दे कर उन की योग्यता से लाभ उठाया जाये। परन्तु पिछले दस बारह वर्षों का अनुभव बताता है कि उस भावना को समाप्त कर के राजनैतिक उद्देश्यों से अनेक व्यक्तियों को सदन का सदस्य बनाया गया।

15.56 hrs.

[Shri M. B. Rana in the Chair]

जो व्यक्ति चुनाव में हार जाते हैं, या जो किसी राजनैतिक दल के लिए अनेक प्रकार से

कष्ट का कारण बन जाते हैं, उन को एकामोडे करने के लिए दूसरे सदनों का उपयोग किया गया।

इस स्थिति में आज दूसरे सदनों का बिल्कुल कोई औचित्य नहीं रह जाता है। वेस्ट बंगाल और पंजाब की सरकारों ने अपने यहां दूसरे सदनों को समाप्त करने का नेक कदम उठाया है। इस लिए वे दोनों बघाई की पात्र हैं। आशा है कि दूसरे राज्य भी उन से प्रेरणा लेंगे और दूसरे सदनों के निर्माण से जनता पर जो भारी भ्रकम खर्च का बोझ पड़ता है, उस को दूर करने का प्रयत्न करेंगे।

आज जिस ढंग से दूसरे सदनों में सदस्य डाल दिये जाते हैं, यदि उसके स्थान पर विभिन्न व्यवसायों, वकीलों, डाक्टरों और लेबर के क्षेत्र में काम करने वालों और अन्य विशेषज्ञों को इन दूसरे सदनों में प्रतिनिधित्व दिया जाये और उस के अनुसार अलग अलग इलेक्ट्रल कालेज बनाये जायें, तो मैं समझता हूँ कि इस देश में दूसरे सदनों की कुछ उपयोगिता हो सकती है। या तो सारे देश में दूसरे सदनों को समाप्त कर दिया जाये और या उन के वर्तमान ढाँचे में परिवर्तन किया जाये, ताकि उन की कुछ उपयोगिता हो। कम से कम आज उन की उपयोगिता बहुत कम रह गई है। खर्च में अनुमान में तो उन की उपयोगिता बिल्कुल नहीं है। इस लिए मैं इस विधेयक का समर्थन करता हूँ।

*SHRI E. K. NAYANAR (Palghat) : Mr. Chairman, Sir, utilising the facility that has been provided to us to speak in our own language I would like to speak in Malayalam. It is for the first time that I am getting an opportunity to speak in my mother tongue in Parliament. Sir, at this time when this Bill is going to be passed I would like to say with some pride that it was my State which took away the Upper Chamber first. In Kerala, when the Travancore Assembly was constituted there was no Upper Chamber. We are now trying to take away the Upper Chamber from each State and as a part

*The original speech was delivered in Malayalam.

[Shri E. K. Nayanar]

of that effect we are now passing this Bill abolishing the Legislative Council in Punjab.

Sir, the atmosphere in our Country has changed after the 1967 General Elections and because of that we find these changes being brought about. Instead of abolishing the Council in each State and bringing a Bill here it would be better if a Bill amending the Constitution is brought here enabling us to pass a legislation abolishing all Upper Chambers.

There are some people and some interests who want to retain the Upper Chambers. Why is it that this matter is proceeding very slowly. In 1956 when the reorganisation of States took place on the basis of language there was very strong objection from the ruling party. But ignoring that opposition the reorganisation of Andhra, Maharashtra and Maha Gujarat took place. After the General Elections of 1967 it has become easier to make these changes. In many States the Congress has lost power. The States which have decided to abolish Legislative Councils are not those where the Congress is in power. These changes can be brought about if a Bill amending the Constitution is passed by us and then we will be able to carry out the desires and aspirations of our people.

Today we have two Chambers at the Centre. The Upper Chamber is not necessary. Crores of rupees are wasted for the purpose of maintaining this Upper Chamber. The Lok Sabha has got more powers to bring forward legislations. I am not saying that the Upper Chamber should be abolished altogether; I am only saying that its constitution should be changed so that all nationalities are given equal representation. The problems of minorities should be attended to and removed. For that purpose their representatives should discuss with equal powers. In a vast country like ours there are many minority problems and communal problems. They should be given proper representation and for that an Upper Chamber is necessary with equal powers as the Lok Sabha. By mere abolition of Rajya Sabha it will not help the progress of democracy.

As a beginning, Sir, the Punjab Legislative Council is being abolished, under Article 169. I think, there are nine

Legislative Councils. In two States they have been removed. Even though there is a proposal to abolish the Legislative Council in Madhya Pradesh, no legislation has yet been framed. All Upper Chambers should be abolished and Rajya Sabha also should be abolished. Instead of Rajya Sabha in the Lok Sabha there should be representation of all nationalities and in that way we can solve the problems of minorities. With this suggestion, Sir, I welcome this Bill.

16.00 hrs.

SHRI N. K. SOMANI (Nagaur): I would not normally have stood up to participate in the third reading on a Bill like this because the final decision on a matter like this belongs to the State Government which has chosen in its wisdom to abolish its Upper Chamber but I am taking this chance to express a thought or two because some hon. Members have taken an extreme point of view and have said some harsh words against the second chamber in the States as well as the Rajya Sabha here. I do not want to go into the entire history of the bicameral structure of the legislatures. This will have to be left to the best judgement of the assemblies concerned. But I submit with humility that democratic institutions have not yet taken such a crystallized shape and our traditions are still young and a lot is said on what is freedom and democracy in this country and new definitions flow from new leaders everyday.

Therefore, if we have a second House, it means just second thoughts for any item of programme or legislation that we have. I have not stood up here to say anything against the Bill, which I made very clear. I would like to say, before I sit down, that it should have an early passage. But, as I said, it is not fair at this stage of time in which our country is situated, to take an extremely harsh view and say that the second chamber is completely either out of tune or completely unnecessary.

Mention was being made that the second chambers are not at all representative of the aspirations or the needs of the people, just because they are either nominated or just because their entry in that House is based on indirect elections. I would only like to say that unfortunately,

to a very large number of people, elections to the Lok Sabha and also to the Assemblies have become very expensive both in terms of time and in terms of money. There are a very large number of people who cannot afford it: some people do not have the inclination; others do not have the resources; and then there are special categories as pointed out by some Members, like artists, scientists or philosophers or research people or even students and minorities who would have to be nominated in one time or another in our present system and in our way of life for quite sometime to come. Therefore, I would like to counsel that each particular action like that would have to be careful, that we should hasten slowly as far as these things are concerned.

With these few words, I would like to commend the passage of this Bill.

श्री जगेश्वर यादव (बांदा): अध्यक्ष महोदय, पंजाब विधान परिषद् को भंग करने के विषय में जो यह बिल आ रहा है मैं उस का हार्दिक रूप से समर्थन करता हूँ और बंगाल सरकार ने भी जो यहाँ की विधान परिषदों को भंग करने की अनुमति की है उस के लिए भी मैं धन्यवाद देता हूँ। मैं चाहता हूँ कि प्रान्तों की हर एक विधान परिषद् को खत्म कर दिया जाय और इस से जो पैसा बचे वह पिछड़े इलाकों के उत्थान में लगाया जाय। मैं यह भी चाहता हूँ कि केन्द्र में जो राज्य सभा है उस को भी भंग किया जाना चाहिए। इसको भंग करने से और विधान परिषदों को भंग करने से मेरा अभिप्राय यह है कि सत्ताधारी पार्टी जो राज्य प्रतिनिधियों को जो कि एलेक्शन में हार जाते हैं उन को पेंशन के रूप में इन में एलेक्ट कर के बँटाना देनी है और वह जनता के बीच में काम नहीं करना चाहते हैं, यही राजधानी में बैठे-बैठे गद्दियों में ऐशो-आराम करना चाहते हैं, जनता से सम्पर्क नहीं रखना चाहते हैं, तो यह एक घन्टा खत्म हो जाय। इसलिए मैं चाहता हूँ कि विधान परिषदों और राज्य सभा को खत्म होना चाहिए। और वह जो पैसा बचे तो जहाँ देश के घन्दर कोई

विकास नहीं है, नई रेलवे लाइन नहीं खुली है, सड़कें नहीं हैं, बिजली नहीं है सिचाई का साधन नहीं है, वहाँ यह खर्च किया जाय ताकि वहाँ भी यह देश की तरक्की दिखने लगे। अभी तक जो बाहरी विदेशी प्रतिनिधि मंडल आते हैं उन को राजपथ दिखा दिया जाता है, राष्ट्रपति भवन के ऐशो-आराम दिखा दिए जाते हैं, मोगल गार्डन दिखा दिया जाता है। यदि उन को कहीं देहातों की दशा दिखा दी जाय, पहाड़ी क्षेत्रों की हालत दिखा दी जाय जहाँ कोई उत्थान नहीं हुआ वहाँ के कोल भोल दिखा दिए जायें तो वह बाहर जा कर इण्डिया की असली तारीफ कर सकते हैं कि इण्डिया का कितना डेवलपमेंट हुआ है। लेकिन विदेशी प्रतिनिधियों को भी धोखे में डाला जाता है। इसलिए जो यह पैसा बचे हमारा वह देश के उत्थान में लगाया जाय और यह राज्य प्रतिनिधियों को पेंशन के रूप में न नामिनेट किया जाय। साथ ही जो नामिनेट डेम्बर होते हैं उन को भी खत्म किया जाय।

SHRI SRINIBAS MISRA (Cuttack): I want to make it clear that I support this Bill only on the ground that the Punjab Legislature wants it. The Constitution gives the legislature the power to pass a resolution and only on that ground I want to support the Bill. The other discussion regarding the existence or the utility of second chambers is not final nor conclusive. If we want to discuss it and come to a conclusion here, the whole nation has to debate on this.

Side by side, Maharashtra wants expansion of the Upper Chamber; Tamil Nadu wants expansion. So, in this country itself, there are two divergent views.

The legislatures of two important big States want that it should be maintained and extended, whereas some other States want it to be abolished. It is left to the States. Because the Punjab legislature wants it, therefore I support it and not on the ground that the second chamber is completely useless.

Many things have been said about Rajya Sabha. Suggestions have been made that the Constitution should be amended to

[Shri Srinibas Misra]

abolish the Rajya Sabha. For that, the whole Constitution has to go, because about 200 and odd articles have to be amended and thrown out. That is not a matter which can be decided in this debate. So far as this Bill is concerned, because the Punjab Legislature wants it, I support it.

SHRI B. P. MANDAL (Madhepura) : Sir, I thank the Punjab Government and Assembly for bringing such a progressive legislation. But I am not happy with only West Bengal and Punjab abolishing the second chamber. All the second chambers in the country should be abolished. A second chamber is not at all necessary. About the Rajya Sabha, my predecessor said it will be very difficult because the entire Constitution will have to be amended. We will have to surmount every difficulty. Difficulties are there to be overcome. I am obliged, no doubt, to the Legislative Council, because I have been a member of the Legislative Council. I resigned the membership of Parliament in order to tide over the constitutional difficulty that was created in the way of my becoming Chief Minister.

We are imitating the foreign countries without rhyme or reason having a second chamber. That is not at all a good sign for the future. I extend my whole-hearted support to this Bill. I hope our Government here also will take credit if they bring a legislation in the next session abolishing the second chamber at the Centre—the Rajya Sabha also, which is a superfluous body.

With these words, I whole-heartedly support the Bill.

श्री तुलश दास जाधव (बारामती) : चेरमैन साहब, पंजाब असेम्बली ने अपना प्रस्ताव पास कर के वहां की कौन्सिल को बरखास्त करने का जो काम किया है वह एक दृष्टि से ठीक है। उस से एक लाभ तो यह होगा कि पंजाब स्टेट का खर्च बचेगा, दूसरा लाभ यह होगा कि इस समय बिल को पास करने में जो देरी होती है, वह बच जायेगी और तीसरा लाभ यह होगा कि जो अप्रत्यक्ष इलेक्शन होता है, इन्डायरेक्ट चुनाव होता है, वह टां जायेगा, क्योंकि डेमोक्रेसी डायरेक्ट

इलेक्शन से आये हुए लोगों के जरिए चले। यही लोकशाही की आत्मा है। ये तीनों फायदे इस में हैं, लेकिन इस के साथ ही साथ जो स्टेट्स अपने यहां से कौन्सिल को खत्म करने जा रही है उन को कुछ खास प्रीकोशन्स लेने होंगे। खास तौर से जब कौन्सिल खत्म होती है, तो असेम्बली में जाने के लिए भीड़ बढ़ जाती है, उस में लोगों की ज्यादा मारामार होगी तो यह खयाल रखना होगा कि उस के लिये कोई प्रायोरिटी या कोई सीनियोरिटी रखनी चाहिये। असेम्बली में जब कोई नया आदमी आता है, जिसने कभी लैजिस्लेचर देखा नहीं है, उस के साथ क्या दिक्कत पैदा होती है। यह हम रोजाना देखते हैं। तो कौन्सिल जब बरखास्त होगी तो असेम्बली में भीड़ बढ़ेगी, उस के लिये हमें हर प्रान्त में जो हमारी जिला परिषदें हैं या ताल्लुका पंचायतें हैं, उन में से ऐसे आदमियों को जिन्हें एक्सपीरियेन्स है, असेम्बली में लेना चाहिये।

दूसरी बात—कौन्सिल में कुछ अल्पसंख्यकों को नुमाइन्दगी मिलती थी, वह अब नहीं मिलेगी। देश की हालत आज यह हो रही है कि जातिवाद और सम्प्रदायवाद बढ़ रहा है, वोट लेने में पैस का प्रयोग हो रहा है, इसलिये जो अल्पसंख्यक हैं उन का यहां आना मुश्किल हो जायगा—यह बात उन प्रान्तों को जो अपने यहां से कौन्सिल को खत्म करने जा रही हैं, खयाल में रखनी होगी।

तीसरी बात—असेम्बली के साथ जब कौन्सिल होती है, तो बलों पर दोनों सदनों में विचार होता है, इसमें देर जरूर लगती है, लेकिन काम ठीक होता है। लेकिन अब केवल असेम्बली रह जायेगी तो यदि ठीक आदमियों को वहां पर भेजा जायगा, जो अनुभवी हों, समझदार हों, तब ही काम ठीक होगा।

SHRI BAL RAJ MADHOK (South Delhi) : Mr. Chairman, Sir, while I welcome

this which is going to abolish the Upper House in Punjab, I should like this Bill to include all the States in the country which have Upper House because the purpose for which the Upper Houses were created by the Constitution is not being fulfilled. I should say that purpose is being defeated by the way the Upper Houses are functioning in the country. They have become the refuge of those people who cannot face the electorate, those who are depending upon the patronage of the political group of the ruling party. In a way they have pinjrapoles in which there are a few docile people, cows, and some stud bulls who go to dominate those Houses. This is happening in our Rajya Sabha also. Therefore, I do not think such an Upper House can serve the function of a revising body, or any other function or purpose envisaged for them by the Constitution-makers. So, all the Upper Houses should go. It is more so in the case of the Upper House we have here called Rajya Sabha.

We have here a body called the House of elders so that the rashness of the lower House can be checked. It was supposed that in the lower House some rash people may come, they may pass legislation in a rash manner and the Upper House should check it as a revising chamber. But what is the actual position? Almost all the Young Turks you find in the Rajya Sabha.

THE MINISTER OF DEFENCE (SHRI SWARAN SINGH): Including your own party?

SHRI BAL RAJ MADHOK: I am talking of the ruling party. You are the ruling party now. We follow your example. The way the political patronage is shown in the matter of the Upper House, whether it is done by my party or your party, it is bad and it should be condemned.

Therefore, my suggestion is that not only the Upper Houses in the State should be abolished but even in the case of the Centre there should be some change. I do not want the abolition of the Upper House altogether in the case of the Centre. But its constitution and composition should be changed. It should take the shape of the American Senate. The American Senate has two members from each State, as representatives of the State. I would like our Rajya Sabha also to become merely

representative of States. All the States, whether big or small, should have equal representation. If a State is too big and it wants more representation, it can cut itself into two. But as a State it cannot have more representation in the Upper House.

Secondly, some criteria and conditions should be laid down so that only senior, elderly people with some experience can go there. Now the minimum age limit for becoming a member of the Lok Sabha is 25 and 30 in the case of Rajya Sabha, only a difference of five years which is not a difference at all. Therefore, some other criteria should be laid down for membership of the Upper House.

Then, until the constitution and composition of the Upper House is changed the system of nomination must be abolished.

The nominations were kept in order to see that certain people who are ripe in experience, whose experience will be useful in the Upper House and who would not like to fight elections, should be put there. But what do we find? Even in the case of nominations, not only party politics but also factional politics comes in and people who otherwise have no justification to be there are put there as nominated members. They do not behave as nominated people and as elders. We have seen a very unsavoury spectacle these days. No sooner had the split taken place, some of the nominated members, who till yesterday were maintaining some kind of an independence jumped on to the bandwagon of the Prime Minister and post haste joined the Prime Minister's camp. By doing so not only have they lowered themselves but also the Upper House, all over the country. Therefore, I submit that till a change is made in the Constitution and the composition of the Upper House, this practice of nomination to the Upper House should be stopped altogether.

SHRI M. YUNUS SALEEM: Sir, I shall ignore the irrelevant points which have been raised but there was one point raised by an hon. Member, whom I have just now satisfied, that by virtue of clause 4 of this Bill, which says:

'In sub-clause (a) of clause (1) of article 161, the word "Punjab" shall be omitted.'

we have got to have a consequential

[Shri M. Yunus]

amendment of article 168 of the Constitution also. That doubt expressed by my learned friend just now has been considered as the hon. Speaker rightly pointed out.

Now, a few words regarding the views expressed by my hon. friends, Shri Somani and others. There is no doubt that the point is debatable. It cannot be said outright that the Upper Houses are always useless in all circumstances. This is not the occasion to discuss the doctrine of direct and indirect elections and the philosophy of having the Upper Chamber and the Lower Chamber. As I submitted, there are advantages and disadvantages, both.

One of the basic ideas introducing the Upper Chambers, *inter alia*, was that there may be certain interests in a country who may not get proper representation in the Lower House—may be, the Assembly or the House of the people—and their absence may be felt. In order to complete the process of democracy, such elements, interests or minorities—maybe religious, linguistic, or any other minority—may be provided in the Upper House.

Then, as has been rightly said by Shri Somani, certain elderly persons, scholars, seasoned politicians, engineers, doctors etc., may not like to contest elections directly. They may not have the means or may not like to contest elections, but their presence would improve the standard and quality of debate and their contribution would be very valuable to the deliberations of the House. Therefore for such persons the existence of an Upper House was felt essential.

So far as the abolition of the Legislative Council is concerned, as I have submitted, it is within the purview of the State Assembly. If a State Assembly resolves that the Legislative Council of that particular State should be abolished, we shall consider it. But if there are certain States which still want to have it, we cannot force them to do away with their Legislative Councils. If there are States which do not have such Councils, and want to have them, we can consider their demand also. But this is not the stage for considering both the aspects of the case.

Regarding the amendment of the Constitution, there are so many difficulties in introducing any simple amendment of the

Constitution. Therefore to discuss the question of the amending the Constitution for the abolition of the Rajya Sabha and the Councils is a farfetched proposition.

MR. CHAIRMAN : The question is ;

"That the Bill be passed."

The motion was adopted.

16.25 hrs.

INTERNATIONAL MONETARY FUND AND BANK (AMENDMENT) BILL

MR. CHAIRMAN : The House will now take up the International Monetary Fund and Bank (Amendment) Bill. Shri, P. C. Sethi.

SHRI SRINIBAS MISRA (Cuttack) : On a point of order, Sir. This Bill cannot be moved now. Please look at article 117 of the Constitution. Article 117 (1) says :

"A Bill or amendment making provision for any of the matters specified in sub-clauses (a) to (f) of clause (1) of article 110 shall not be introduced or moved except on the recommendation of the President..."

The recommendation of the President is necessary under article 117 (1) for introducing or moving the Bill.

Now, in the Bulletin, Part II, No. 1320, the recommendation of the President is as follows :

"The President having been informed of the subject-matter of the proposed Bill further to amend the International Monetary Fund and Bank Act, 1945 recommends the introduction of the Bill in the Rajya Sabha."

What has he recommended ? Only the introduction of the Bill has been recommended by the President. What is the Minister doing now ? He is moving the Bill for consideration. He cannot do it now because the recommendation of the President is only for its introduction.

MR. CHAIRMAN : Please read it further.